ज्ञानामृत

जून, 1986

वर्ष 21 ❋ अंक 12

मूल्य 1.50

जयपुर में राजभवन में राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. बहिनें ।

विसनगर में आध्यात्मिक मेले के उदघाटन अवसर पर बोलते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री अमर सिंह चौधरी जी ।

वलिंगटन-न्यूज़ीलैंड में ब्र.कु. भावना मेयर तथा एक एम.पी. के साथ ।

माउंट आबू : राजस्थान के वन, पर्यावरण तथा ट्रान्सपोर्ट मन्त्री भ्राता शीशराम ओला जी पांडव भवन में ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि तथा अन्य ब्र. कु. भाई बहिनों के साथ।

बोकारो स्टील सीटी (बिहार) में "राजयोग भवन" का शिलान्यास के बाद समारोह में प्रवचन करती हुई ब्र० कु० कानन। मंच पर राजयोगिनी दादी निर्मलशान्ता जी, भ्राता पी०एन० त्रिपाटी जी, भ्राता बलवीर सिंह जी आदि बैठे हैं।

माउंट आबू पाण्डव भवन में ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि, मुख्य प्रशासिका ब्र. ई.वि. विद्यालय, उड़ीसा राज्य के वित्त तथा विधि मंत्री भ्राता गंगा मोहपात्रा जी को राजयोग डायरी सौगात देते हुए।

माउंट आबू : ओम शान्ति भवन में आयोजित "मानव उन्नति के लिये शिक्षा" गोष्ठी में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. दादी प्रकाशमणी जी। मंच पर (दाएं से) भ्राता गंगाधर मोहपात्रा, वित्त तथा विधि मन्त्री उड़ीसा, ब्र. कु. निर्वैर जी, भ्राता घनश्याम.पारिख, डीन गुजरात विश्वविद्यालय विराजमान हैं। बच्चे बड़े ध्यान पूर्वक सुनते हुए।

माउंट आबू में आयोजित राजयोग शिविर में बम्बई गाम देवी से पधारे सिंधी भाई-बहिनों का एक ग्रुप ओमशांति भवन के समक्ष।

माउंट आबू स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय में बच्चों के लिये पुस्तकालय का उद्घाटन कर रहे हैं भ्राता बी. वर्मा, निदेशक आन्तरिक सुरक्षा अकाडमी, माउंट आबू तथा ब्र. कु. दादी प्रकाशमणि जी।

हैदराबाद में ब्र०कु० मोहन आन्ध्र प्रदेश के राज्यपाल कुमदबेन जोशी को श्री कृष्ण का चित्र भेंट करते हुए।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

अहमदाबाद मणिनगर सेवा केन्द्र के वार्षिकोत्सव निमित रखे गये समारोह में केक काटते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जो।

मोदीनगर राजयोग भवन के वार्षिक उत्सव के शुभ अवसर पर बहन गायत्री मोदी जी अपने विचार व्यक्त कर रही हैं।

बम्बई में 'हृदय रोग और राजयोग' सम्मेलन में महाराष्ट्र के शिक्षा व कानून मंत्री चन्द्रिका बेन केनिया अपने विचार प्रगट कर रही हैं।

बम्बई उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री बी०जी० कौलसे पाटिल को चित्र देते हुए डा०बी०के० अशोक भाई,

हरिद्वार में पायलट बाबा की ओर से आयोजित विश्व-धर्म संसद में ब्र.कु. **प्रेमलता** भाषण करते हुए ।

अमृत सूची

१. शरीर पर आत्मा सवार है, आत्मा पर माया सवार है ? १
२. परीक्षाएं साधना पथ की (सम्पादकीय) २
३. सचित्र समाचार ४
४. मनसा सेवा ५
५. पूछ खुद से (कविता) ८
६. राजयोग के लिये आत्मा का परिचय ९
७. कैसे हों हमारे बोल ? १३
८. महिलाओं के लिये बदलता हुआ विश्व १५
९. वरदानों से झोली भर लो, वरदाता वर लुटा रहा (कविता) १७
१०. नई शिक्षा नीति १८
११. दृढ़ निश्चय बल और मेरा अनुभव ! १९
१२. दिव्य-जीवन कन्या छात्रावास के भवन का इंदौर में निर्माण २१
१३. ऐसी थी वह यात्रा २२
१४. बदला नहीं लेना किसी से, स्वयं को बदल के दिखाना है ? २४
१५. स्वास्थ्य सम्मेलन २५
१६. वरदानी वर्ष में वरदानों की वर्षा २७
१७. सचित्र समाचार ३०
१८. आध्यात्मिक सेवा समाचार ३१

शरीर पर आत्मा सवार है, आत्मा पर माया सवार है ।

शरीर को आत्मा का रथ अथवा घोड़ा माना गया है । आत्मा इस रथ का कोचवान अथवा इस घोड़े का सवार है । आत्मा इस शरीर-रूपी घोड़े को जैसे चाहे चला सकती है क्योंकि उसकी लगाम अथवा बागडोर आत्मा के हाथ में है । आज स्थिति यह है कि आत्मा परतंत्र हो चुकी है । शरीर-रूपी घोड़े की लगाम तो निस्संदेह आत्मा के हाथ में है परंतु आत्मा पर तो मोटी माया सवार है । आत्मा की लगाम इस माया रूपिणी भूतनी के हाथ में है । यह आत्मा पर सवार होकर कभी उस द्वारा शरीर को काम-वासना में, कभी क्रोध में, कभी लोभ, कभी मोह और कभी अहंकार के कार्यों में लगाये रखती है । परिणामस्वरूप अब यह घोड़ा भी मरियल हो गया है, आत्मा भी दुखी है । ऐसी स्थिति से छुटकारा पाने के लिए माया अथवा विकारों से छुटकारा पाना जरूरी है । आत्मा ने अपनी जो लगाम माया के हाथों में दे रखी है, उसे माया के हाथों से वापस लेने की आवश्यकता है वरना जब तक आत्मा पर माया सवार रहेगी और जब तक आत्मा की लगाम उसके हाथ में रहेगी तब तक गति और सद्गति नहीं होगी । □

माउंट आबू पाण्डव भवन, ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी ग्राता शीशराम ओला, राजस्थान के वन, पर्यावरण तथा यातायात मंत्री को ईश्वरीय सौगात देते हुए ।

कृपया ध्यान दीजिये

ज्ञानामृत का २१वां वर्ष जून मास के अंक के साथ समाप्त हो रहा है । ज्ञानामृत का नव-वर्ष जुलाई से प्रारंभ हो रहा है ।

सर्व सेवाकेंद्रों की इंचार्ज भाई-बहिनों से निवेदन है कि वे अपने केंद्रों के ज्ञानामृत के सदस्यों की संख्या २०, जून तक आवश्य लिख भेजें । पत्र लिखते समय अपने सेवाकेंद्र की मोहर अवश्य लगाएं ।

परीक्षाएं साधना पथ की

जब कोई साधना के पथ पर चलता है तो उसके सामने बीच-बीच में कोई विघ्न भी आ उपस्थित होते हैं । उसे कई परीक्षाओं को भी पार करना होता है । अपने जीवन की आखिरी आध्यात्मिक मंजिल पर पहुंचने के समय तक मनुष्य के सामने छोटी-बड़ी कई समस्याएं भी आती रहती हैं । परंतु दृढ़ता, धीरज और एक परमात्मा में निश्चय को धारण करनेवाला व्यक्ति इन सभी को पार करते हुए आखिर अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सफल हो ही जाता है ।

परीक्षा-पत्र स्वार्थियों, निन्दकों आदि द्वारा

ये कलियुगी संसार निन्दकों, चापलूसों, स्वार्थियों और उकसानेवालों से भरा पड़ा है । इसलिए साधना-पथ पर यात्रियों के सामने जो परीक्षाएं उपस्थित होती हैं, उनमें से एक परीक्षा के परीक्षा-पत्र बनानेवाले यही लोग होते हैं । ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के अभ्यास में कौन कितना परिपक्व है और सहनशीलता, धीरज आदि गुणों की किसने कितनी धारणा की है, उसकी एक परीक्षा ऐसे लोगों के द्वारा भी हो ही जाया करती है । मान लीजिए कि एक व्यक्ति, जिसे आप वर्षों तक अपना घनिष्ट मित्र समझते रहे; बार-बार अपने ही स्वार्थ सिद्धि को सर्वोपरि रखता है; जब कभी भी मौका आता है, वह अपना ही काम निकालता है । आप उसे अपना हाल बताते रहते हैं और उसका आतिथ्य भी करते रहते हैं परंतु उसका व्यवहार आपसे सदा साधारण ही रहा है । तब एक दिन उसकी अमिट स्वार्थ-भावना को देखकर आपको कैसा लगेगा ? आपके मन में क्या विचार आयेंगे ? अथवा एक व्यक्ति, जिसे आप ज्ञाननिष्ठ मानते हैं, आपकी अनुपस्थिति में आपके विरुद्ध लोगों के कान भरता है, तब आपको कैसा लगेगा ? इसी प्रकार कोई वरिष्ठ योगाभ्यासी जिसमें आपकी श्रद्धा है, समय पर आपके हित की अवहेलना करे अथवा आपसे न्याय करता हुआ प्रतीत न हो तब आपके मन में उसके प्रति क्या विचार उठेंगे ? तभी तो पता लगेगा कि आपके मन में आनंद, शांति, प्रेम, उत्साह, उमंग, ज्ञान, योग, सद्गुण टिके रहते हैं या गर्म तव्वे पर पानी की तरह से भाप बनकर उड़ जाते हैं । फिर संसार में स्वार्थी, निन्दक, न्याय रूपी गुण में कमजोर लोग तो बहुत हैं । अतः एक नहीं, अनेक बार ऐसी परीक्षाएं आपके जीवन में आती रहेंगी और अगर अभी तक नहीं आयीं तो आगे चलकर आयेंगी ।

परीक्षा पढ़ाई और परिपक्वता का साधन है

कौन है जिसके जीवन में ऐसी परीक्षाएं नहीं आतीं ? किसी के जीवन में आज परीक्षा आती है तो अन्य किसी के जीवन में एक वर्ष के बाद । परंतु, यह एक पढ़ाई है और पढ़ाई में से उत्तीर्ण अथवा पारंगत होने के लिए प्रैक्टिकल (Practical) परीक्षा तो देनी ही पड़ती है । **ये परीक्षाएं केवल हमारी परिपक्वता को मापने का ही साधन नहीं होतीं बल्कि हमारे जीवन को मोड़ देनेवाली, हमें अनुभवी और मजबूत बनानेवाली और हमारे कई आवांछित परंतु पक्के संस्कारों को तोड़-तोड़ कर हमारा रास्ता साफ करनेवाली भी होती हैं** । हम ऊपर जो उदाहरण दे आए हैं, उन्हें ही ले लीजिए । मान लीजिए कि किसी ज्ञानी और योगी आत्मा के साथ आपका स्नेह है परंतु उसका स्नेह अपने स्वार्थ ही के साथ है । अथवा मान लीजिए कि आपकी किसी वरिष्ठ अधिकारी से न्याय होने की पूरी उम्मीद थी परंतु आपको परिणाम इसके विपरीत ही देखने को मिलते हैं तो इनमें से प्रथम वृत्तान्त का फल यह होगा कि आपके मन को इस सत्यता का बोध होगा कि एक परमात्मा ही मन का सच्चा मीत है और कि मनुष्य तो अपने ही स्वार्थ-सिद्धि के प्यासे हैं और दूसरे वृत्तान्त के परिणामस्वरूप आप सोचेंगे कि सच और झूठ का सच्चा-सच्चा इन्साफ करनेवाला तो एक परमपिता परमात्मा ही है । **इन दोनों में से हरेक वृत्तान्त का मधुर फल यह होगा कि परमात्मा से आपकी प्रीति और पक्की होगी और "मन्मनाभव" रूपी जो मंत्र है उसका अर्थ अब आप केवल भलीभांति समझेंगे ही नहीं बल्कि उसमें टिकेंगे भी और उसमें आपका कल्याण हो जायेगा ।** इस प्रकार ये परीक्षाएं परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से हमारी पढ़ाई की परिपक्वता का साधन हैं । **जब ये सामने आती हैं तब लगता तो ऐसे ही है कि ये हमारे मन को मरोड़ रही हैं परंतु टेढ़ी लकड़ी अथवा टेढ़ी चारपाई को सीधा करने के लिए उसके कोनों पर जोर तो देना ही पड़ेगा ।**

वास्तव में परमपिता परमात्मा ने तो हमें ये शिक्षा दे ही दी

है कि **न्यारे और प्यारे** होकर चलो । उन्होंने हमें केवल न्यारे होने की शिक्षा नहीं दी, न ही केवल प्यारे होने की शिक्षा दी है । जब हम न्यारेपन और प्यारेपन का संतुलन नहीं सीख पाते तब कुछ परीक्षाएं आकर हमें झकझोर कर सिखाने की कोशिश करती हैं ।

यही बात निन्दा के विषय में भी ली जा सकती है । **जिन्हें आनंद रस प्राप्त नहीं होता वे निन्दा रस के व्यस्नी बन जाते हैं** । आज नहीं तो कल हरेक की सच्ची या झूठी निन्दा होती ही है । निन्दा सच्ची हो या झूठी इसका दोनों में से कोई भी रूप मनुष्य को प्रिय नहीं है । अपनी बुराई अपने ही मुंह मनुष्य भले ही कर ले लेकिन वह दूसरे से प्रशंसा के ही दो वचन सुनकर प्रसन्न होता है । अगर उसकी प्रशंसा न भी हो तब भी वो चला लेता है परंतु निन्दा तो उसे कड़ुवे घूंट की तरह से महसूस होती है जिसे उसे गले से उतारना मुश्किल अनुभव होती है । निन्दक के प्रति उसके मन में घृणा और उद्वेग उत्पन्न होते हैं और उस घृणा और उद्वेग को न आने देने या जल्दी से हटाने में उसे मुश्किल का अनुभव होता है जबकि ईश्वरीय ज्ञान के अनुसार उसे निन्दक को अपना मित्र अर्थात् स्नेहास्पद मानना चाहिए । इस प्रकार निन्दा की परीक्षा सामने आने पर जब मनुष्य अपने मान-शान को नष्ट होता हुआ महसूस करता है तब उसे अपनी भी असलियत का पता लगता है और उसका मन उस परमात्मा की ओर भी मुड़ता है जो उससे अगाध प्रेम करता है यद्यपि उस मनुष्य में अनेक अवगुण और त्रुटियां हैं । अत: वास्तविक में तो निन्दकों से पाला पड़ने पर तो मनुष्य के मन में वास्तविक में तो निन्दकों से पाला पड़ने पर तो मनुष्य के मन में यह भाव उत्पन्न होना चाहिए कि ये मेरे मन को दुनिया से हटाकर प्रभु से जोड़ने की सेवा के निमित्त हैं, इसलिये ये धन्यवाद के पात्र हैं ।

परीक्षा प्रशंसा और पैसे की...

ऐसे ही एक प्रकार की परीक्षा सामने तब आती है जब मनुष्य के काफी प्रशंसक हो जाते हैं । बहुत से लोग उसके निकट आने की इच्छा से भगवान की प्रशंसा छोड़कर उसकी प्रशंसा करते हैं । अन्यश्च जब मनुष्य के पास खूब धन, वैभव और मानप्रतिष्ठा आना शुरू हो जाएं, ऐसे में भी वह व्यक्ति उन वस्तुओं व व्यक्तियों से उपराम रहता है या नहीं— ये भी उसकी परीक्षा हो जाती है । उसका जीवन सादा बना रहता है या वो साधनों, सुविधाओं और सुखों का भोग करने की कामना करने लगता है—ये परीक्षा पत्र उसके सामने आता है । दूसरों को सुख-सुविधाओं को इकट्ठा करते देख वो उनका अनुकरण करता है या सदा उसका सादगी रूपी लक्ष्य उसके सामने बना रहता है ? इस प्रश्न का उसे प्रैक्टिकल उत्तर देना होता है । ऐसी परिस्थिति सामने आने पर ही जो सादगी और साधना के पथ पर मजबूत कदमों से आगे बढ़ता चलता है और जो अपनी महिमा सुनने पर भी भगवान को ही महिमा योग्य और सर्व-महान मानते हुए आगे बढ़ता चलता है, वही अपने उच्चलक्ष्य तक ठीक पहुंच पाता है । **सच कहा गया है कि त्याग से ही भाग्य बनता है । साधना से ही सिद्धि होती है और एक परमात्मा से मुहब्बत करने से ही मंजिल तक पहुंचने में सफलता प्राप्त होती है । इन विघ्नों को विदा करते हुए और परीक्षाओं को पार करते हुए इस वर्ष त्याग और तपस्या के बल से हमें अपने साधना के मार्ग पर काफी आगे निकल जाना है ।**

—जगदीश

बम्बई गामदेवी सेवा केन्द्र पर ब्र०कु० दादी जानकी जी विश्व शान्ति भ्रमण पर जाने के पहले पधारी थीं आपने विश्व शान्ति पर अपने शुभ विचार सुनाए

दसपल्लला उप सेवा केन्द्र पर ब्र०कु० अल्का भ्राता धर्मनन्दा दतार ओ०ए०एस० को साहित्य भेंट कर रही हैं।

भावनगर सेवा केन्द्र पर शहर के प्रसिद्ध गायक कलाकारों को आमन्त्रित किया गया था। गायकों के साथ ब्र०कु० मोहन भाई ब्र०कु० गीता बहन आदि बैठे हैं।

नवगांव के आध्यात्मिक समारोह में प्रवचन करते हुए ब्र०कु० शीला, साथ में बहन चम्पा व भ्राता पन्ना लाल जी बैठे हैं।

वेरावल सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित "युवा जागृति पदयात्रा के उद्घाटन समारोह में डिप्टी कलेक्टर भ्राता सिंह साहब वक्तव्य दे रहे हैं।

रायगढ़ सेवा केन्द्र की ओर से चन्द्रपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर पर चन्द्रपुर के राजकुमार भ्राता दुष्यंत सिंह जूदेव को ब्र०कु० चित्रा बहन श्री लक्ष्मी श्री नारायण का चित्र भेंट करते हुए।

बलसार सेवा केन्द्र की ओर से राबडा गीता पाठशाला में नये राजयोग हाल का उद्घाटन हुआ। इस शुभ अवसर पर अनेक मुख्य व्यक्ति पधारे थे यह चित्र उसी अवसर का है।

"मनसा-सेवा"

□ब्र.कु. सूरज कुमार, माउंट आबू

अचानक ही नेताजी के चेहरे पर मधुर मुस्कान की सरल रेखाएं उभरने लगीं, उनका मन प्रसन्नता-से खिल उठा, उनके कमरे का गर्म वातावरण शीतल होने लगा, नेताजी के मस्तिष्क की सलवटें खुलने लगीं, और वे गा उठे, मिल गया...मिल गया... हल मिल गया... ।

ये सब अचानक कैसे हुआ ? कुछ क्षण पूर्व ही तो वे इसी कक्ष में गहरी चिंता में डूबे हुए थे, उनका कमरा तनाव-से युक्त नजर आ रहा था, लगता था कि कमरे से गर्म-गर्म लहरें चारों ओर फैल रही हैं । ऐसा लगता था कि सारे संसार के पापियों का बोझ आज मानो नेताजी पर ही लाद दिया गया हो, वे कभी इधर देखते थे, कभी उधर... उनकी उदासी बढ़ रही थी कि क्या होगा... ?

ये सब हुआ संकल्प-शक्ति के प्रभाव से । दूर बैठा हुआ एक तपस्वी, नेताजी को शुद्ध संकल्पों का व शांति का प्रवाह भेज रहा था । उसके प्रभाव से नेताजी की चिंता, प्रसन्नता में बदल गयी, उनकी उलझन समाधान में परिवर्तित हो गई और उनका मन पुनः खुशी में हिलोरे मारने लगा ।

ये संकल्प-शक्ति की सेवा, सबसे महान्, अति-शक्तिशाली व अविनाशी सेवा है । इस शक्ति से विश्व को बदला जा सकता है, रोतों को हंसाया जा सकता है, तड़पतों को शांति दी जा सकती है । निराशा की आंधी को रोका जा सकता है, दूसरों की कमजोरियों को नष्ट किया जा सकता है, संसार में पुनः शांति की लहर फैलाई जा सकती है ।

मनसा सेवा क्या है ?

जैसे हम मुख द्वारा ज्ञान सुनाकर दूसरों को ईश्वरीय संदेश देते हैं, शांति के बोल बोलकर दूसरों को शांति देते हैं, मीठी वाणी द्वारा दूसरों को सुख पहुंचाते हैं, अच्छे शब्दों द्वारा दूसरों का उमंग-उत्साह बढ़ाते हैं, अर्थात् हमारे मुख से निकले शब्द कानों द्वारा उन तक पहुंचते हैं, ठीक वैसे ही हमारे मन से निकले श्रेष्ठ संकल्प दूसरों के मन तक पहुंचें । हमारा मन दूसरों के मन की सेवा करे, हमारे संकल्प दूसरों को ईश्वरीय संदेश दें, दूसरों को सुख-शांति व शक्ति दें, उमंग-उत्साह दिलायें—यह है मनसा सेवा ?

मनसा सेवा के लिए धारणाएं

सर्वप्रथम मनसा सेवा के प्रयोगों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन कम-से-कम ८ घंटा अव्यक्त स्थिति का होना परम आवश्यक है । यह ८ घंटे योग तो किसी योगी आत्मा की अपनी ही प्यास है । यदि आत्मा स्वयं ही प्यासी होगी तो वह दूसरों की प्यास कैसे मिटायेगी ? अतः हमें चाहिए कि वर्तमान समय में, ईश्वरीय आहवान के अनुरूप इस तपस्या को तीव्र करें ।

हमारे इस योग अभ्यास में भी इतनी एकाग्रता हो कि हमारे संकल्प इस दूषित वायुमंडल को पार करके उस आत्मा तक पहुंच जाएं । क्योंकि हमारे व दूसरों के मध्य अत्यंत तमोप्रधान, विकृत वाईब्रेशनस हैं और यदि हमारे संकल्पों में एकाग्रता का बल नहीं होगा, तो वे संकल्प इस दूषित वायुमंडल में ही मिलकर नष्ट हो जाएंगे ।

अतः हमारे संकल्प उन लेसर किरणों की तरह हों, जिन्हें कोई भी भौतिक शक्ति नहीं रोक सकती । तब ही मनसा सेवा में सफलता होगी । अर्थात् सूक्ष्म सेवा करने के लिए हमारे संकल्पों में पवित्रता व योग का संपूर्ण बल होना चाहिए ताकि संकल्पों के प्रवाह को कोई भी रोक न सके ।

मनसा सेवा के लिए ३ मुख्य धारणाओं की आवश्यकता है ?

१. संपूर्ण पवित्रता, २. संपूर्ण नष्टोमोहा, ३. डबल लाइट। क्योंकि इन तीनों की कमी ही संकल्प-शक्ति को कमजोर बनाती है । किसी भी तरह की अपवित्रता संकल्प-शक्ति को एकाग्र नहीं होने देती और संपूर्ण पवित्रता से ही आत्मा की बेहद की वृत्ति बनती है । मोह मन को बार-बार विचलित करता है तथा आसक्त भाव से की गई मनसा सेवा सफल नहीं होती और कर्मक्षेत्र पर उत्पन्न भारीपन संकल्पों के प्रवाह को मंद कर देता है, इसलिए कर्मक्षेत्र पर स्वयं को पूर्णतया हल्का रखना परम आवश्यक है ।

मनसा सेवा और मन की स्थिति

एक स्वच्छ व सरल मन ही अपनी आवाज दूसरों के मन तक पहुंचा सकता है । मन में यदि स्वयं ही असंतुष्टि है, मन यदि स्वयं ही शांत नहीं रह सकता तो वह औरों को क्या शांति देगा ? मन यदि खुद ही निर्बल है, तो वह औरों को क्या बल देगा ? यदि मन स्वयं के ही संस्कारों के अधीन हो तो वह दूसरों के संस्कारों को कैसे बदलेगा ! मन की यदि वृत्ति ही

दूषित है तो वह वृत्ति-से वृत्ति कैसे बदलेगा ! इसलिए दूसरों की मनसा सेवा के लिए आनंदित मन, पवित्र मन, सुलझा हुआ मन, योग-युक्त मन व सदा ज्ञान की लहरों में लहरानेवाला मन चाहिए । ऐसे ही दिव्य मन के वाइब्रेशन्स दूसरों तक पहुंचते हैं ।

श्रेष्ठ संकल्पों द्वारा प्रदूषित को शुद्ध करना

हम देखते हैं कि एक सुंदर, आकर्षक व शांत प्रकृति का प्रभाव भी मनुष्य के मन को प्रसन्न कर देता है । यदि एक उदास और अशांत मनुष्य प्रकृति के इस सौंदर्य को देखकर आनंदित हो उठता है, जड़ प्रकृति की सुखद तरंगें उसके मन की स्थिति को सुखद कर देती हैं तो एक योगी के श्रेष्ठ संकल्प और एक पवित्र आत्मा के शीतल वाइब्रेशन्स मनुष्यों को कितनी अधिक शांति व आनंद देंगे ।

आज चारों ओर सरकारी स्तर पर प्रदूषण को रोकने के लिए योजनाएं बनाई जाती हैं ताकि मनुष्य को श्वास लेने में कष्ट न हो और उसके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव न पड़े । परंतु किसी को भी इस बात का अहसास नहीं कि वायुमंडल के अतिरिक्त वातावरण भी कितना प्रदूषित हो चुका है ? रात-दिन कुकृत्यों में रत प्राणी, विकृत चिंतन में व्यस्त मनुष्य, बुरे विचारों की आंधी फैलाता हुआ, राक्षसी प्रवृत्ति का मानव वातावरण को कितना दूषित कर रहा है, जिस कारण आज मनुष्य श्वांस तो ले रहा है परंतु वह सुख की श्वांस नहीं ले पा रहा है । तो इस बढ़ती अशांति व तनाव का कारण ये दूषित संकल्पों का वातावरण है । इसे पवित्र व श्रेष्ठ संकल्पों से ही विशुद्ध किया जा सकता है । तो हम योग-अभ्यासियों को प्रतिदिन शुद्ध संकल्पों से ये महान् कार्य करना चाहिए ।

"मनमना भव"—सर्वश्रेष्ठ मनसा सेवा

सर्व आत्माओं को ईश्वरीय संदेश व ईश्वरीय ज्ञान देने के अतिरिक्त, इस कलियुगी दुनिया को सतयुगी दुनिया में बदलने के लिए हमें अन्य भी कुछ महत्वपूर्ण कार्य करने हैं । जो इस प्रकार हैं:—

- सर्व आत्माओं को मुक्ति व जीवन-मुक्ति का वरदान देना ।
- वातावरण को पावन करना ।
- जानवरों, पक्षियों को पावन करना ।
- प्रकृति अर्थात् तत्वों को शुद्ध करना ।
- भूत-प्रेत अर्थात् भटकती हुई आत्माओं को शांति देना अर्थात् ठिकाना देना ।
- नई सृष्टि के लिए भूमिका तैयार करने गई आत्माओं (Advance Party) को सहयोग देना ।
- नव-युग की योग-बल की सन्तति के लिए गर्भ में ही शरीर को पावन करना ।
- कलियुगी दुनिया की समाप्ति के लिए शक्तिशाली वाइब्रेशन्स भेजना ।
- विनाश के साथ-साथ व उसके बाद में भौगोलिक परिवर्तनों के लिए और उनसे संबंधित ग्रहों के परिवर्तनों के लिए तैयारी करना ।
- विनाश काल में तड़पती आत्माओं को शांति देना ।

योग-बल से स्वयं को कर्मातीत बनाने के साथ-साथ ये सब दिव्य और अलौकिक कार्य भी करने हैं । अब स्वयं ही विचार किया जा सकता है कि इस महान् कार्य के लिए कितने योग-बल की आवश्यकता है ? यदि योग-अभ्यास से आत्मा स्वयं ही भरपूर नहीं हुई होगी तो उसका प्रवाह बाहर कैसे जायेगा ।

ईश्वरीय महावाक्य है—"तुम योग-युक्त रहो तो अनेक आत्माओं को स्वत: ही बल मिलता रहेगा ।" और "जो बच्चे प्रतिदिन ८ घंटा योग-युक्त रहते हैं, वे मानो विश्व की सबसे अधिक सेवा करते हैं क्योंकि इस योग से ही संपूर्ण विश्व में पावित्रता, शांति व शक्ति का प्रवाह फैलता है ।"

अर्थात् जो आत्मा स्वयं जितना योग-युक्त है, उसके द्वारा उतनी ही अधिक विश्व की सेवा होती है । अर्थात् योग-युक्त रहना व श्रेष्ठ संकल्पों में रहना ही इस बेहद की मनसा सेवा का साधन है । परंतु यदि आत्मा स्वयं ही युद्ध-रत है, व्यर्थ व अपवित्र संकल्पों के अधीन है, तो उसके द्वारा तो और ही विघ्न पैदा होता है ।

इसलिए महान् स्थापना के कार्य की जिम्मेदार महान् आत्माओं को अपनी जिम्मेदारियां संपन्न करने के लिए संकल्प-शक्ति को इतना एकाग्र करना होगा और 'योग' को निरंतर स्थिति तक ले जाना होगा । तब ही उनके एक-एक संकल्प से चारों ओर सुख और शांति का प्रवाह फैलेगा ।

मनसा सेवा के सुंदर स्वरूप

हम सभी ब्राह्मण राजयोगी आत्माएं, इस कल्प वृक्ष की जड़ें हैं । परमात्मा इस कल्प वृक्ष के बीज-स्वरूप हैं । जैसे जड़ों द्वारा वृक्ष के पत्ते-पत्ते तक भोजन पहुंचता है, वैसे ही हम योगी आत्माओं द्वारा भी इस कल्प वृक्ष की प्रत्येक आत्मा को भोजन पहुंचता है । और वह भोजन है—हमारे संकल्प ।

यदि हमारे मन में शक्तिशाली संकल्प होंगे तो सभी आत्माओं को शक्तिशाली भोजन प्राप्त होगा, अर्थात् अनेक आत्माओं को बल प्राप्त होगा, श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति प्राप्त होगी, उनके तनाव दूर होंगे, उनकी चिंताएं मिटेंगी । और यदि हमारे मन में कमजोर या अशुद्ध संकल्प हैं, तो उनका प्रभाव असंख्य आत्माओं पर पड़ेगा । कोटि-कोटि आत्माएं स्वयं में निराशा, अशांति व तनाव महसूस करेंगी ।

ईश्वरीय महावाक्य भी है—''तुम्हारा Attention अनेकों के Tensions दूर करेगा ।'' इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि श्रेष्ठ व शक्तिशाली स्थिति में रहना स्वयं ही सर्वश्रेष्ठ व सूक्ष्म सेवा है ।

दूसरी बात—''हम राजयोगियों की योग-अग्नि से विश्व में व्याप्त माया के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं । ठीक उसी तरह जैसे सूर्य की किरणों से दूषित कीटाणु नष्ट हो जाते हैं ।'' अर्थात् योग की शक्तिशाली स्थिति में रहना ईश्वरीय कार्य में सबसे सुंदर सहयोग है ।

तीसरी बात—''हमारी ज्ञान-युक्त व योग-युक्त स्थिति हमारे चेहरे पर ऐसी दिव्यता लाती है, जिससे अनेक आत्माओं को स्वतः ही प्रेरणाएं प्राप्त होती हैं । उनमें ज्ञान ग्रहण करने की प्यास बढ़ती है ।

इसके अतिरिक्त सभी के प्रति शुभ-भावना रखना भी सर्वश्रेष्ठ मनसा सेवा है । जो कार्य हम वाचा द्वारा नहीं कर सकते, वह कार्य सहज ही शुभ-भावनाओं से किया जा सकता है । संसार में हम ही तो श्रेष्ठ व महान् आत्माएं हैं, जो आत्माओं को शुभ-भावनाओं द्वारा शीतलता प्रदान कर सकते हैं । शेष सभी आत्माओं के शुभ-भावनाओं के भंडार तो ईर्ष्या, द्वेष व शत्रुता की अग्नि में भस्म हो चुके हैं ।

मनसा सेवा के प्रयोग

अब विश्व में अकाले मृत्यु व प्राकृतिक प्रकोपों के कारण चारों ओर अशांति बढ़ती जा रही है । ऐसे विकट काल में कराहती हुई आत्माएं प्यासी नजरों से चहुं ओर देख रही हैं उन्हें शांति कौन देंगे ? तो आओ, हम श्रेष्ठ योगी चारों ओर शांति का प्रवाह फैलायें । ये सूक्ष्म सेवा विशेष रूप से अमृतवेले व शाम के शांत वातावरण में की जा सकती है, क्योंकि उस समय दूषित वातावरण का प्रतिरोध कम-से-कम होता है ।

यों तो योग के द्वारा संपूर्ण विश्व की सेवा की जाती है परंतु प्रयोग के लिए हम कुछ आत्माओं पर भी इनका प्रयोग कर सकते हैं । इस स्थिति में हमारी प्राप्ति इतनी बढ़ जाए ताकि उसका प्रवाह चारों ओर फैलने लगे । केवल संकल्प करने से कुछ नहीं होगा, बल्कि संकल्प के साथ योग की अत्यधिक शक्ति भी आवश्यक है । मनसा सेवा के कुछ प्रयोग इस प्रकार किये जा सकते हैं ।

दूसरों को ईश्वरीय संदेश देना

योग में एकाग्र होकर व उस आत्मा को सम्मुख प्रकट करके यदि हम उसे ईश्वरीय संदेश देंगे, तो वह उसे उस ही रूप में प्राप्त होगा । और उसे ऐसा आभास होगा कि किसी ने हमें संदेश दिया । यदि हमारी स्थिति पूर्णतया अव्यक्त होगी तो उसे हमारा सूक्ष्म शरीर भी दिखाई देगा ।

रूहों से रूह-रिहान करना

जिस प्रकार हम मुख के द्वारा परस्पर वार्तालाप करते हैं, उसी प्रकार निराकारी स्थिति में, मन द्वारा रूहों से भी वार्तालाप की जा सकती है । उन्हें नये संकल्प दिये जाएं, उनकी निराशाओं को दूर करके उमंग भरा जाए, उन्हें आनंदित किया जाय । इस सेवा में, जो संकल्प हमारे मन में उठेंगे, वही संकल्प उनके मन में भी उठेंगे ।

आत्माओं का आह्वान करना

इसी प्रकार योग-युक्त होकर अमृतवेले आत्माओं का आहवान भी किया जा सकता है । ऐसा करने से उन आत्माओं को समीप आने की खैंच होगी या ज्ञान-योग सीखने की प्रेरणा प्राप्त होगी । जो कार्य हम पर्चे बांटकर करते हैं, वही कार्य अब संकल्प-शक्ति से करें । हमें याद रखना चाहिए कि एक पवित्र व योग-युक्त आत्मा के संकल्पों में वही बल होता है जो सर्वशक्तिवान के संकल्पों में ।

आत्माओं को शांति व शक्ति देना

शांतस्वरूप आत्मिक रूप में स्थित होकर व शांति-सागर परमात्मा से योग-युक्त होकर हम पहले स्वयं गहन शांति में

स्थित हों और फिर इस शांति का प्रवाह किसी भी अशांत आत्मा की ओर कर दें, उस आत्मा को शांति अनुभव होगी ।

इसी प्रकार सर्वशक्तिवान से बुद्धि जोड़कर असीम शक्तियों का प्रवाह आत्माओं की ओर भेजने से, उन कमजोर आत्माओं को स्वयं में बल प्राप्त होगा ।

शुभ-भावनाओं से दूसरों के संस्कार व वृत्ति बदलना

हमारी शुभ-भावनाओं के वाइब्रेशन्स तुरंत दूसरों पर प्रभाव डालते हैं । योग का पर्याप्त बल भरकर, दूसरों को शुभ-भावनाएं देकर, उनकी शत्रुवत् वृत्ति को मित्रता में बदला जा सकता है । इसी प्रकार श्रेष्ठ संकल्पों का बल देकर किसी के भी कड़े संस्कार बदले जा सकते हैं ।

तो आओ, समय की इस तीव्र दौड़ में इन सूक्ष्म प्रयोगशालाओं का निर्माण करें, बिना धन व साधनों के आध्यात्मिक बल से स्थापना के इस दिव्य कार्य को संपन्न करें, तड़पती हुई आत्माओं को सुख-चैन दें ताकि विश्व में अवतरित परमपिता का नारा पुन: गूंज उठे । पहले हम अपने मन की सेवा करें, फिर यह मन विश्व की सेवा करेगा । □

"पूछ खुद-से"

■ ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क, देहली

न कौन? न क्यूं? न क्या? न कैसे?
न ऐसे, न वैसे, न तैसे, न जैसे ।

न यह विषय तेरा न ध्यान दिया कर,
सोचना ही है गर, तो बस यही किया कर ।

खुद क्या हूं मैं बाप की नजर में,
बढ़ा हूं कितना परमात्म डगर में ।

न यह न वह न यहां न वहां,
न इहां न जहां न तहां न कहां ।

न चलाऊं बुद्धि को क्या पड़ी है मुझे,
चलानी ही है गर तो चले बात इस पे ।

हूं मैं खुद कहां तक ईश्वरीय मनन में,
हूं कितना खरा परमात्म चलन में ।

न इसपे, न उसपे, न आपपे, न तुमपे,
न हमपे, न तिनपे, न किनपे, न उनपे ।

होऊं नाराज यह ठीक कहां तक
देखूं हिसाब अपना साक्षी बन अब ।

हूं संतुष्ट क्या मैं खुद से, खुद की नजरों में,
आखिर चुने गुण कितने मैंने रूहे गुलशन से ।

आए कोई, जाए कोई, भाए कोई, कोई न भाए,
कोई तोड़े, कोई जोड़े, कोई जुटा हुआ तुड़वाए ।

न मिला काम तुझे जो जाओ कारण की जड़ में,
जाना ही है गर तो जाओ इस मन्थन में ।

है बनाया निर्विघ्न खुद को कितना योगबल से,
बीत तो नहीं रहा समय मेरा कहीं परचिंतन में ।

बढ़ा हूं कितना खुद परमात्म डगर में,
न आज न कल न जब न तब ।

न अब न कब न डग न मग,
है बदलना, खुद को, खुद इसी पल में,
बढ़ा हूं कितना मैं परमात्म डगर में ।

राजयोग के लिए आत्मा का परिचय

□ब्र.कु. शीलू., माउंट आबू

राजयोग की साधना करनेवाला मैं साधक कौन हूं ? इसका परिचय प्राप्त करना राजयोगी के लिए परम आवश्यक है । ''आप कौन हैं ?'' यह प्रश्न जितना ही सरल है उतना ही गहन है । गीता के भगवान् ने अर्जुन को कहा है, ''हे अर्जुन, तुम स्व की स्थिति में रहो तो तुम्हारा कल्याण होगा ।'' सुकरात जैसे महान विचारक ने भी कहा, ''अपने-आपको पहचानो ।'' क्या मनुष्य अपने-आपको नहीं जानता है ? अगर जानता होता तो यह प्रश्न सदियों से नहीं चला आता ।

''आप कौन हैं ?'' प्रश्न पूछने पर प्रत्येक व्यक्ति अपना शारीरिक परिचय देगा । वह उत्तर में अपना नाम, लिंग, गुण, व्यवसाय, धर्म, जाति आदि का वर्णन करेगा । कोई अगर अपना व्यवसाय बतलाता है तो यह निश्चित है कि किसी भी व्यवसाय को प्रारंभ करने से पूर्व उस व्यक्ति का अस्तित्व होता है और व्यवसाय को छोड़ देने के बाद भी उसका अस्तित्व बना रहता है । तो केवल व्यवसाय वर्णन करना यह पूर्ण परिचय नहीं हुआ । इसी प्रकार सभी शारीरिक परिचय विनाशी हैं क्योंकि वे विनाशी देह के साथ संबंधित हैं । परंतु जब यह कहा जाता है कि ''मैं परमात्मा के घर से आया हूं और मुझे परमात्मा के घर जाना है'', तो यह कहनेवाला ''मैं'' कौन हूं ? शरीर न परमात्मा के घर से आया है, न परमात्मा के घर जायेगा । शरीर का पिता होते हुए भी शरीर के अंदर वह कौन-सी सत्ता है जो परमात्मा को अपना पिता कहती है ?

जब हम कहते हैं कि ''हमें शांति चाहिए'', तो शांति की इच्छा रखनेवाला भी मैं कौन हूं ? अगर केवल शरीर को शांति चाहिए तो किसी की मृत्यु के बाद जब शरीर शांत हो जाता है तब फिर आत्मा की शांति की कामना नहीं की जानी चाहिए । किसी की मृत्यु हो जाने पर अगर कोई रोता है तो उसे इसलिए रोका जाता है कि कहीं रोने से आत्मा अशांत न हो जाए । परमात्मा से प्रार्थना में भी यही कहते हैं कि, ''हे प्रभु, इनकी आत्मा को शांति देना ।'' मृतक शरीर के आगे दीपक जगाकर रखते हैं ताकि आत्मा को सही दिशा प्राप्त हो ।

इससे स्पष्ट है कि ''मैं'' कहनेवाली आत्मा है न कि शरीर । मैं आत्मा साधक हूं और शरीर मेरा एक साधन है । शरीर और आत्मा के अंतर का मूलभेद ''मैं'' और ''मेरा'' इन दो सर्वनामों के प्रयोग से स्पष्ट किया जा सकता है । तो ''आप कौन हैं ?'' का सही उत्तर यही है कि ''मैं आत्मा हूं और यह मेरा शरीर है ।'' ''मैं'' शब्द आत्मा की ओर इंगित करता है । और ''मेरा'' आत्मा के साधन शरीर की ओर संकेत करता है । इसी प्रकार शरीर के विभिन्न अंगों के लिए भी ''मेरा'' शब्द प्रयोग किया जाता है, न कि ''मैं'' शब्द जैसे कि मेरा मुख, मेरे हाथ, मेरी आंखें आदि, और समूचे शरीर के लिए—मेरा शरीर ।

आत्मा तथा शरीर का संबंध ड्राइवर और मोटर के समान है । जैसे मोटर में बैठकर ड्राइवर उसे चलाता है और अलग अस्तित्व रखता है, वैसे आत्मा भी शरीर में रहकर उसका संचालन करती है और शरीर से अलग अस्तित्व रखती है । जब आत्मा और शरीर का संबंध हो तब ही आत्मा जीव-आत्मा कहलाती है । तब ही ''मनुष्य'' शब्द कहने में आता है । आत्मा ही देह की इंद्रियों द्वारा कर्म करती है और उन्हीं कर्मों का फल सुख या दुख रूप में देह की इंद्रियों द्वारा ही भोगती है । इसलिए तो कहावत है कि ''आत्मा अपना ही मित्र है और अपना ही शत्रु है ।'' आत्मा ही जीवात्मा के रूप में कर्मों के लेप-विक्षेप में आती है, तब ही ''महात्मा'', ''पुण्यात्मा'', ''पापात्मा'', का संज्ञा का प्रयोग आत्मा के लिए होता है न कि शरीर के लिए । शरीर को महत्व या मूल्य तब तक है जब तक उसमें आत्मा का निवास है । जिस प्रकार बीज का महत्व ही तब है जब उसको धरती, जल, वायु या तेज दिया जाय । इसी प्रकार आत्मा का भी महत्व तभी है अथवा वह कर्म तब कर सकती है जब उसे शरीर प्राप्त है । तो आत्मा और शरीर इस संसार-रूपी कर्मक्षेत्र में एक-दूसरे के लिए परम आवश्यक हैं । लेकिन अनुभव करनेवाली आत्मा है और शरीर उसका साधन या माध्यम है ।

आत्मा क्या है ?

आत्मा एक अजर, अमर, अविनाशी सत्ता है । वह सत्य है, चैतन्य है, जो तलवार से काटी नहीं जा सकती, पानी के स्पर्श से गीली नहीं हो सकती, हवा के स्पर्श से सूख नहीं सकती,

अग्नि में जल नहीं सकती अर्थात् प्रकृति के स्पर्श से उसका कोई भी बाह्य परिवर्तन नहीं हो सकता । लेकिन आत्मा का स्वरूप क्या है ? आत्मा, जो इन चर्म-चक्षुओं से दिखनेवाली वस्तु नहीं, का परिचय अल्पज्ञ आत्मा स्वयं नहीं दे सकती । जिस प्रकार बच्चे का परिचय उसका पिता ही देता है, उसी प्रकार आत्मा का परिचय भी सर्वज्ञ परमपिता परमात्मा ही दे सकते हैं । परमपिता परमात्मा ने जो प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा हमें आत्मा का परिचय दिया है वह यहां दिया गया है ।

आत्मा का स्वरूप—आत्मा एक अति सूक्ष्म, दिव्य, चैतन्य ज्योतिबिंदु है । आत्मा की तीन मुख्य शक्तियां हैं—मन, बुद्धि और संस्कार जो उसकी चैतन्यता का आधार हैं ।

मन—यह आत्मा की ही विचार शक्ति का नाम है । मनरूपी शक्ति के द्वारा ही आत्मा कल्पना करती अथवा सोचती और विचार करती है । विचार प्रक्रिया ही समस्त इच्छाओं, लालसाओं तथा अनुभूतियों का आधार है । मन की गति के लिए कहावत है कि यह प्रकाश और आवाज की गति से भी तीव्र है । मन एक क्षण से भी कम समय में कितनी ही दूरी पर भी पहुंच सकता है । यह सूक्ष्म शक्ति होने के कारण समय तथा स्थान की सीमाओं के बंधन से पार है । मन और हृदय में अंतर है क्योंकि हृदय शरीर का भौतिक अंग है जो रक्त संचरण को बनाये रखने का कार्य करता है लेकिन मन तो आत्मा की शक्ति है । मन के अंदर अनेक प्रकार के विरोधी संकल्प भी चलते हैं जिनका निर्णय बुद्धि देती है ।

बुद्धि—यह आत्मा की तर्क और परखने की शक्ति का नाम है । बुद्धि का कार्य है—पहचानना, समझना, स्मृति, तर्क विश्लेषण एवं निर्णय लेना । बुद्धि और मस्तिष्क में भी अंतर है क्योंकि मस्तिष्क शरीर के नियंत्रणकक्ष के रूप में है लेकिन बुद्धि आत्मा की निर्णायक शक्ति है ।

संस्कार—यह आत्मा के किये हुए कर्मों का प्रभाव है, जो आत्मा अपने साथ अगले जन्म के लिए ले जाती है । इनके आधार पर ही फिर मन में संकल्प उत्पन्न होते हैं । इसी प्रकार यह चक्र चलता ही रहता है । संस्कार ही धारणाओं, अभिरूचियों, संवेगों, भावनाओं, दृष्टिकोणों, स्वभावों, व्यक्तिगत विशेषताओं तथा आदतों का वह समूह है जिस पर आत्मा के विचार आधारित होते हैं । मनुष्य का संपूर्ण व्यक्तित्व उसके संस्कारों का ही प्रतिबिंब होता है ।

शरीर में आत्मा का स्थान

आत्मा प्रकाश और शक्ति-युक्त एक अत्यंत सूक्ष्म ज्योतिबिंदु है । जो मस्तक के मध्य में 'भृकुटी' के स्थान पर निवास करती है । इसी स्थान के लिए कहावत है—''भृकुटी के बीच चमकता है इक अजब सितारा ।'' विज्ञान के अनुसार भी हल्की वस्तु सदैव ऊपर रहती है । इसी तथ्य के प्रतीक-स्वरूप मस्तक पर इस विशेष स्थान पर लालबिंदी लगाने की आम प्रथा है । योगी इस स्थान को आज्ञाचक्र कहते हैं । स्व अनुभूति की निशानी ''तीसरा नेत्र'' भी इसी स्थान पर दिखाया जाता है जिसे दसवां द्वार भी कहते हैं । कई लोग समझते हैं कि आत्मा हृदय में निवास करती है । लेकिन जैसे बताया गया है—हृदय तो केवल रक्त संचारण का केंद्र है, जबकि आत्मा मस्तिष्क के द्वारा, पूरे शरीर का नियंत्रण करती है । आप देखेंगे कि शरीर की महत्वपूर्ण इंद्रियां जिनके द्वारा आत्मा कार्य एवं अनुभव करती है, जैसे दिमाग, आंखें, नाक, कान और मुख सभी चेहरे पर आत्मा के निवास स्थान के आसपास ही हैं ।

भृकुटी आत्मा का शरीर में अस्थाई स्थान है जो केवल एक जन्म के लिए ही रहता है । आत्मा और शरीर का संबंध एक अभिनेता और उसके वस्त्र के समान है । जिस प्रकार एक अभिनेता अपने अभिनय अनुसार वस्त्र बदलता है, इसी प्रकार आत्मा रूपी अभिनेता इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपने कर्मों के अनुसार एक देह रूपी वस्त्र छोड़कर दूसरा धारण करती है । इसी देह छोड़ने और लेने की प्रक्रिया को ही जन्म-मरण कहा जाता है वरना आत्मा का न जन्म होता है न मरण । जिस प्रकार रंगमंच अभिनेता का घर नहीं होता है, लेकिन वह अभिनय करने के लिए अपने घर से आता है इसी प्रकार यह सृष्टि रूपी रंगमंच आत्मा का घर नहीं है । आत्मा के लिए कहावत है कि वह एक मुसाफिर के समान भगवान के घर से इस सृष्टि रूपी मुसाफिरखाने में अकेली आई है और अकेली ही उसे वापस लौटना है । दुःख की घड़ी में आत्मा ही अपने असली धाम को याद करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि 'हे प्रभु, मुझे अपने पास बुला लो ।'' तो अवश्य इस अनादि-अविनाशी आत्मा का स्थायी स्थान कहीं और है । अपने सच्चे घर को याद करते समय आत्मा ऊपर आकाश की ओर देखती है । अब परमात्मा ने दिव्य-दृष्टि के द्वारा हमें आत्मा के असली निवास स्थान का भी परिचय दिया है । आत्मा का मूल निवास स्थान सूर्य, चांद, तारामंडल और ५ तत्वों की स्थूल दुनिया से तथा सूक्ष्मवतन (जहां सूक्ष्म देवता ब्रह्मा, विष्णु, शंकर निवास करते हैं) से भी पार परमधाम है । इसी धाम से आत्माएं इस साकार सृष्टि पर आती हैं । इस धाम के कई नाम हैं, जैसे कि—

(अ) परमधाम—क्योंकि वह सबसे श्रेष्ठ धाम है ।

(ब) **मुक्तिधाम**—क्योंकि यहां सब आत्माएं मुक्ति की अवस्था में अर्थात् जन्म-मरण, सुख-दुख से न्यारी स्थिति में निवास करती हैं ।

(स) **निर्वाणधाम**—क्योंकि यहां आत्माएं वाणी से पार स्थिति में हैं ।

(द) **शांतिधाम**—क्योंकि यहां सर्वत्र शांति-ही-शांति है । प्रकृति का कोई तत्व ही नहीं जो आवाज हो ।

(क) **मूलवतन**—क्योंकि यह आत्माओं का असली घर है ।

(ख) **निराकारी दुनिया**—क्योंकि यहां आत्माएं अपने निराकारी ज्योतिर्बिंदु स्वरूप में निवास करती हैं ।

(ग) **ब्रह्मलोक**—क्योंकि यह ५ तत्वों से पार सुनहरे लाल रंग का छठा अखंड ज्योति महत्व है जिसे ब्रह्म महत्व कहते हैं ।

(घ) **परलोक**—जो सब लोकों से पार अथवा दूर है ।

परमधाम में कोई स्थूल पदार्थ नहीं है इसलिए वहां किसी भी प्रकार की क्रिया नहीं होती है । वहां आत्माएं सुषुप्त अवस्था में निवास करती हैं । क्योंकि प्रकृति न होने के कारण चेतना की भी अनुभूति नहीं होती है । आत्माएं परम शांति की स्थिति में निवास करती हैं । इसीलिए प्रत्येक मनुष्यात्मा मुक्ति या परम शांति की कामना करती है ।

आत्मा का कर्त्तव्य

यह आम प्रश्न हर-एक के मन में उभरता है कि अगर आत्मा शांतिधाम में शांति की स्थिति में स्थित है तो उसे इस सृष्टि पर आने की क्या आवश्यकता है ? परंतु यह निर्विवाद सत्य है कि आत्मा एक अभिनेता के समान है । अभिनेता की संज्ञा उसे दी जाती है जो मंच पर आकर अभिनय करता है । आत्मा की चैतन्यता प्रकट ही तब होती है अथवा वह अनुभूति तब ही कर सकती है जब वह शरीर रूपी वस्त्र में इस सृष्टि रूपी रंगमंच या कर्मक्षेत्र पर उपस्थित हो । आत्मा का यह स्वाभाविक कर्त्तव्य है कि वह सृष्टि रूपी रंगमंच पर शरीर रूपी वस्त्र धारण कर कर्म करती रहे क्योंकि वह स्वयं अनादि-अविनाशी है, उसका कर्त्तव्य भी अनादि-अविनाशी है, साथ-साथ जिस कर्मक्षेत्र पर वह कर्म करती है वह भी अनादि और अविनाशी है । इसीलिए वह सदाकाल के लिए कर्म से छूट नहीं सकती ।

आत्मा का मूल स्वभाव

मूल संस्कार—हर आत्मा अनादि स्वरूप से अपने मूल संस्कारों में ज्ञान स्वरूप, पवित्र स्वरूप, शांति स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनंद स्वरूप, शक्ति स्वरूप आदि-आदि है । कोई भी व्यक्ति अशांति, दुख या नफरत नहीं चाहता है क्योंकि ये आत्मा के मूल गुण नहीं हैं ।

मूल गुण खोने का कारण—आत्मा जब परमधाम से पहली बार इस सृष्टि रूपी कर्मक्षेत्र पर उतरती है, तब वह अपने आदिस्वरूप या संस्कारों में पवित्र और सतोप्रधान है लेकिन बार-बार पुनर्जन्म लेने के कारण आत्मा शरीर के प्रति आसक्त हो जाती है, जिससे देह-अभिमान की उत्पत्ति होती है । देह-अभिमान के कारण ही आत्मा ५ विकारों अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वशीभूत हो जाती है जिसके फलस्वरूप वह अपने मूल गुणों को खो देती है । यही विकार आत्मा के दुख और अशांति के मूल कारण हैं ।

आज हर आत्मा अपना स्वरूप, अपने स्व-लक्षण, अपना स्व-देश, अपना स्व-धर्म तथा अपने परमपिता परमात्मा इन सबको भूल गई है और विषय-विकारों की दासी बन चुकी है । ऐसी स्थिति को देखते हुए परमपिता परमात्मा हम आत्माओं को फिर से राजयोग के द्वारा आत्मा के अनादि और आदि-स्वरूप की पहचान कराकर स्व अनुभूति करा रहे हैं ।

शांति हर आत्मा का स्वधर्म या निजी गुण है, अतः उनकी बाहर खोज करना निरर्थक है । बाहय संसार में शांति की खोज करनेवालों की तुलना उस राजकुमारी से की जाती है जो नौलखा हार गले में पहन रखने के बावजूद उसे सारे महल में ढूंढ़ती रही या उस मृग की तरह जो कस्तूरी की मोहक सुगंध के पीछे दौड़ता फिरता है । उसे ज्ञात नहीं होता कि सुगंध उसकी अपनी नाभि से ही आ रही है । मन की शांति आत्मा का अपना मूल गुण है । जब आत्म-स्थिति का अभ्यास पक्का हो जाता है तो वह स्वयं अंदर से ही प्रकट होती है । सत्यता तो यही है कि गुण कभी नष्ट नहीं होते लेकिन देह-अभिमान या अज्ञान के पर्दे के कारण ढक जाते हैं और पर्दा हटने पर ये फिर से अनुभव होते हैं ।

'मैं आत्मा हूं'', इस शाश्वत सत्य को पहचानने से आत्मा अन्य को भी आत्मा रूप में भाई-भाई की दृष्टि से देखती है । यही भाई-भाई की दृष्टि आत्मा में पवित्रता की अनुभूति कराती है और पवित्रता ही सुख और शांति की जननी है । पवित्रता के

आधार पर सर्व आत्माओं के प्रति आत्मिक प्यार और स्वयं में आनंद की अनुभूति होती है । आत्मा जितना इन गुणों को धारण करती जाती है उतना शक्ति का अनुभव कर विकारों पर सहज विजय प्राप्त कर सकती है ।

राजयोग की प्रथम अवस्था—आत्म-स्थिति

आत्मा का परिचय प्राप्त करने के बाद आत्म-स्मृति के आधार पर आत्म-स्थिति, जो राजयोग की प्रथम अवस्था है, का अनुभव करना अत्यंत सहज होता है । राजयोग में हठयोग के आसन करने की आवश्यकता नहीं, मन को पद्म समान न्यारा रखना ही राजयोग का पद्मासन है । बाहय आसन सुखासन का रूप रखिए जिससे बैठने में कोई कष्ट न हो ।

राजयोग में आंखें बंद करने की भी आवश्यकता नहीं है । इसके कई कारण हैं—

(अ) यह राजयोग हमें कर्मयोग की प्रेरणा देता है जो आंखें बंद करके नहीं किया जा सकता । राजयोगी चलते-फिरते, उठते-बैठते, हर समय अपनी आत्मिक स्थिति बनाये रखता है ।

(ब) बंद आंखें निद्रा, सुस्ती या थकावट का संकेत देती हैं । अत: आंखें बंद करने की अपेक्षा अपने मन को बाहय विचारों से बंद करके एकाग्रता से मनन करना यह अधिक लाभदायक है । यह एक सामान्य अनुभव की बात है कि जब कोई व्यक्ति गहन विचार में डूबा हुआ होता है तो यद्यपि उसके नेत्र खुले रहते हैं तथापि उसे अपने आस-पास का कुछ भी आभास नहीं रहता ।

(स) आंखें खुली रख योग करने से दृष्टि पवित्र बन जाती है क्योंकि उस समय हम अन्य को भी आत्मा रूप में देखते हैं । किसी भी व्यक्ति को देखते समय भृकुटी में आत्मा देखने से दृष्टि की चंचलता समाप्त हो जाती है ।

राजयोग के लिए श्रेष्ठ वातावरण

राजयोग अभ्यास के लिए प्रात: ब्रह्म मुहूर्त ४ से ५ बजे का समय सर्वश्रेष्ठ है । इस समय चारों ओर का वातावरण अत्यंत शांत होता है और मन ताजा होता है । अपने घर के किसी स्वच्छ और शांत स्थान को योग अभ्यास के लिए निश्चित कर लें । कमरे में लालरंग के बल्ब का प्रकाश किया जा सकता है, यह परमधाम् के सुनहरे लाल ब्रह्म महत्व की स्मृति में सहायक रहेगा । अगरबत्ती भी जला लें, तो अच्छा है । यदि मन अस्थिर हो तो एकाग्रता के लिए कोई वाद्य-संगीत या प्रभु प्रेम के गीत का रिकार्ड बजा लें । इससे योगानुकूल मनोदशा बनने में सरलता रहेगी । यह बाहय साधन जरूरी नहीं है, परंतु कई बार साधना में मदद देते हैं ।

स्व स्वरूप में स्थित होने की विधि

पहले स्वयं को देह से न्यारा कर एक ज्योतिर्बिंदु आत्मा निश्चय कीजिए । फिर मन और बुद्धि को देह की दुनिया से न्यारा कर आत्माओं की दुनिया में ले जाइये और वहां स्वयं को अपने असली स्वरूप में स्थित कीजिए । निम्नलिखित मनन-चिंतन के आधार पर आत्म-स्थिति बनाइये—

मैं एक आत्मा हूं... इस शरीर को चलानेवाली, आंखों द्वारा देखनेवाली, मुख द्वारा बोलनेवाली, कानों द्वारा सुननेवाली, मैं एक चैतन्य शक्ति हूं...मैं आत्मा अति-सूक्ष्म ज्योतिर्बिंदु हूं... चमकता हुआ दिव्य सितारा हूं... । मैं अविनाशी हूं...सत्य हूं...आनंद स्वरूप हूं... । यह शरीर मेरा रथ है...इस पर सवार मैं आत्मा रथी हूं... । यह शरीर मेरा वस्त्र है...इसको धारण कर मैं आत्मा एक्टर समान इस सृष्टि पर पार्ट बजा रही हूं... । मैं आत्मा भृकुटी में विराजमान होकर शरीर की कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करती हूं और कर्मेन्द्रियों द्वारा ही सुख या दुख का अनुभव करती हूं... ।

मैं आत्मा वास्तव में इस आवाज की दुनिया से दूर...सूर्य, चांद, तारागण से पार,... तत्वों की दुनिया से भी पार...अखंड ज्योति ब्रह्म महतत्व, शांतिधाम्, परमधाम्, की निवासी हूं... वहां से इस सृष्टि मंच पर आकर मैंने जन्म-जन्मांतर यहां अनेक नाम रूपवाले शरीर लेकर पार्ट बजाया... । अब मुझे वापिस उस ज्योति के देश में लौटना है... । मैं आत्मा अब बुद्धि बल के द्वारा अपने घर जा रही हूं... । अहा ! ५ तत्वों से पार इस घर में सर्वत्र शांति है...पवित्रता है...प्रकाश है... निस्संकल्पता है...असीम शांति...है । ओहो यह कैसी न्यारी और प्यारी अवस्था है...यहां मैं आत्मा निज स्वरूप में स्थित हूं...मैं आत्मा अपने अनादि स्वरूप में स्थित हूं... । मैं शुद्ध स्वरूप हूं...शांति स्वरूप हूं...सुख स्वरूप हूं...प्रेम स्वरूप हूं...आनंद स्वरूप हूं...शक्ति स्वरूप हूं... । अब मैं आत्मा अपनी निजी शांत स्थिति का अनुभव कर रही हूं... । □

कैसे हों हमारे बोल ?

□ले.-ब्र.कु. चक्रधारी., दिल्ली

एक बार की बात है कि एक गुणवान राजा अपने वजीर और एक सेवक के साथ शिकार के लिये जंगल में गया । एक शिकार के पीछे वे अपने घोड़े सरपट दौड़ा रहे थे । इसी दौड़ में वे बहुत आगे निकल गये और एक-दूसरे से बिछुड़ गये । राजा सबसे आगे थे और राजधानी से काफी दूर पहुंच गये थे । अंधेरा हो चला था । इसलिए उन्होंने सोचा कि अब अपने वजीर और सेवक को साथ लेकर वापस अपने ठिकाने पर लौटना चाहिए । इसी विचार से वे अब शिकार का पीछा छोड़ इन दोनों को ढूंढने लगे ताकि इकट्ठे वापस लौट सकें । जिस रास्ते पर वे जा रहे थे, उसी रास्ते के किनारे एक फकीर की कुटिया भी थी । फकीर बुजुर्ग था, अनुभवी था और बुद्धिमान भी परंतु उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता था । वह बैठा हुआ भगवान को याद करता रहता और जंगल के कंदमूल खाकर अपना पेट भर लिया करता । वह स्वभाव का बहुत अच्छा था और यदि कोई भूला-भटका मुसाफिर उधर आ निकलता तो जंगली फलों से उसकी भी सेवा कर दिया करता ।

जब राजा का घोड़ा कुटिया के सामने पहुंचा, तब फकीर कुटिया के बाहर बैठा था । राजा ने बड़े सम्मानपूर्वक लहजे से फकीर को सम्बोधित करते हुए कहा—"दरवेश साहब, क्या मेरे आने से पहले किसी और मुसाफिर के जाने की आवाज आपने सुनी है ?"

फकीर ने कहा—"नहीं महाराजाधिराज, आपकी जय हो । आपसे पहले अभी और तो किसी के जाने की आवाज सुनाई नहीं दी ।"

राजा बोला—"अच्छा दरवेश साहब धन्यवाद ! तो अब हम जाते हैं । अगर हमारे पीछे-पीछे कोई और आयें तो उन्हें कह देना कि पहले भी एक घुड़सवार इधर से गया है । और वह कह रहा था कि हम कुछ आगे जाकर इंतजार करेंगे ।"

दरवेश—"जैसे महाराज की इच्छा हो ।" अभी राजा को गये हुए थोड़ी ही देर हुई थी कि एक दूसरा घोड़े पर सवार कुटिया के सामने आया । फकीर को घोड़ा रोकने की आवाज सुनाई दी ।

घुड़सवार ने पूछा—"दरवेश जी, इस रास्ते से मुझसे पहले भी कोई गुजरे हैं ?"

दरवेश ने कहा—"जी हां, मंत्री महोदय, महाराजाधिराज अभी-अभी यहां से गुजरे हैं और उन्होंने कहा कि वो आगे जाकर रुकेंगे ।"

मंत्री—"धन्यवाद ! अच्छा, हम चलते हैं ।"

दरवेश—"जैसी आपकी इच्छा !"

अभी थोड़ी ही देर हुई होगी कि एक तीसरे घुड़सवार वहां आकर रुके । इस घोड़े पर सेवक सवार था ।

सेवक ने कहा—"फकीर जी, इस मार्ग पर मुझसे पहले कोई घुड़सवार गुजरे हैं ?"

दरवेश—"जी हां, कार्यवाह जी, महाराजाधिराज और मंत्री महोदय एक के बाद एक अभी थोड़ी ही देर हुई, यहां से गुजरे हैं ।"

सेवक बोला—"अच्छो बात है । मैं भी जाता हूं ।"

दरवेश—"जैसे आप ठीक समझें ।"

अब जब तीनों राजा, मंत्री और सेवक इकट्ठे हुए तो उन्हें बात करने पर आश्चर्य हुआ कि निगाह न होने के बावजूद भी दरवेश ने उन्हें कैसे पहचान लिया कि उनमें से कौन राजा, कौन मंत्री और कौन सेवक है । मंत्री ने राजा से प्रस्ताव किया कि इस प्रश्न का उत्तर दरवेश के पास चलकर ही पूछना चाहिए । अत: वे वापस दरवेश की कुटिया पर आये ।

कुटिया पर पहुंचकर महाराजा ने दरवेश को कहा—"दरवेश साहब, क्या हम अपनी एक जिज्ञासा आपके सामने रख सकते हैं ?"

दरवेश ने कहा—"हुक्म कीजिए, महाराज !"

महाराज—"दरवेश साहब, आपने कैसे जान लिया कि हममें से कौन क्या है ? हममें से किसी ने आपको अपना परिचय तो दिया नहीं । तब आप यह कैसे जान सके ?"

दरवेश—"महाराज, हरेक के बोलने के तरीके से और हरेक के शब्दों से मेरी समझ में जो आया, मैंने वो निवेदन किया । क्या कुछ गलती हो गई महाराज ? अगर गलती हुई हो तो महाराज क्षमा करें ।"

महाराज—"नहीं...नहीं...दरवेश साहब, हमें तो आपकी ठीक जानकारी पर आश्चर्य हुआ ।"

दरवेश—"आपने मुझे दरवेश साहब कहा था, मंत्री महोदय ने दरवेश जी और कार्यवाह ने 'फकीर जी' । तीनों के अपने-अपने बोल सुनकर मुझे उनके स्थान और उनके कुल का परिचय हुआ । ये बुजुर्गों ने ही काफी पहले से कहा हुआ है कि

आदमी के वचनों से उसका परिचय मिलता है।''

महाराज बोले—''दरवेश साहब, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! आपने बुद्धिमता की एक बहुत अच्छी बात हमें बताई। अब हम तीनों चलते हैं। नमस्कार!''

दरवेश—''महाराज की जय हो। मंगलम् अस्तु...

प्यारे बच्चो, अब हमें इससे भी ज्यादा बुद्धिमता की बात यह मालूम हुई है कि हम सब शिवबाबा के पोते व ब्रह्मा बाबा के बच्चे हैं। रॉयल बच्चों के रॉयल ही बोल होने चाहिए। हम ईश्वरीय बच्चों के ईश्वरीय बोल होने चाहिए। ओम-शांति! □

दिल्ली लारेंन्स रोड में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया नगर निगम के सदस्य भ्राता साहब सिंह वर्मा जी को ब्र०कु० कृष्णा ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

केशोद में विश्व-शान्ति सम्मेलन, में ब्र०कु० सरला बहन, ब्र०कु० दमयंती, डां० अघरो साहब, व्यापारी असोसिएशन के प्रमुख मंच पर दिखाई दे रहे हैं।

बम्बई विलेपार्ले सेवा केन्द्र पर मुख्य व्यक्तियों का स्नेह-मिलन रखा गया था ब्र०कु० योगिनी बहन अनुभव सुनाते हुए।

महिलाओं के लिये बदलता हुआ विश्व

□ब्रह्माकुमारी राधा., अजमेर

आदिकाल सतयुग में नर और नारी के अधिकार और कर्तव्यों में कोई भेद नहीं था। श्रीलक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य था। नर और नारी अर्थात् समूचा विश्व सतयुग में सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोतम, संपूर्ण अहिंसक था। इसी कारण उस समय की मानव सभ्यता अपने चरम उत्कर्ष पर थी व वह समय स्वर्णिम युग कहा जाता था। उस समय भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति सर्वोच्च शिखर पर थी। संसार में न रोग था न शोक था न कोई समस्या थी। २५०० वर्षों तक मानव की यह सभ्यता विकसित रही। चारों ओर पूर्ण सुख-शांति एवं पवित्रता का ही साम्राज्य था। किंतु धीरे-धीरे समय का प्रभाव पड़तें-पड़ते देवताओं के पुण्य कर्म भी क्षीण होते गये व मानव आत्मभान को भूल देहभान में फंसता चला गया और निर्विकारी सृष्टि से विकारी सृष्टि का प्रार्दुभाव हो गया। विकारी बनते ही नर और नारी का भेद शुरू हो गया व नर ने नारी का शोषण करना शुरू कर दिया।

मध्ययुग से भारतीय व्यवहार परम्परा में महिलाओं का स्थान दूसरे दर्जे का होकर रह गया। यह तो कहने भर की ही बात रही कि "यत्र नार्युस्तु पूजन्ते: रमन्ते तत्र देवता।" हां, महिलाओं की प्रशंसा में विपुल साहित्य रचा गया परंतु व्यवहार में तो उपेक्षा ही रही। ऐसी ही तारीफों का सहारा लेकर नारियों का शोषण किया जाता रहा। दूसरी तरफ सच्चाई यह है कि स्त्रियों ने सदैव पुरुष वर्ग की चुनौतियों के विरुद्ध चुनौतियां प्रस्तुत की हैं। महावीर और बुद्ध की शरण में गई स्त्रियों ने जब उनके सामने प्रस्ताव रखा कि वे दीक्षित होना चाहती हैं तो क्या उनके पूरे शिष्य समुदाय में हड़कम्प नहीं मच गया था? जबकि उतने बड़े पुरुष साधु समुदाय में प्रविष्ठ होते चंदनबाला व आम्रपाली जैसी का मन विचलित नहीं हुआ।

मेवाड़ से कृष्ण प्रिया मीराबाई मथुरा आई। कृष्ण दर्शन को, वहां पर मंदिर के द्वार खटखटाये, मीरा ने आवाज दी कि "दरवाजा खोलो, मीरा आई है कृष्ण के दर्शन करने।" परंतु अंदर से पुजारी की आवाज आई कि "वह दरवाजा नहीं खोल सकता क्योंकि उसने स्त्री को न देखने का संकल्प लिया है। "मीरा ने चुनौतीपूर्ण मुद्रा में जवाब दिया—"स्त्रियों से डरनेवाले कृष्ण को क्या पूजेगा? वह तो कृष्ण से मिलने आई है, उसकी दृष्टि में कृष्ण के अलावा कोई नहीं है। मीराबाई का पूरा जीवन महानता से घिरा रहा है परंतु इतिहास ने सिर्फ कृष्ण के प्रेम में पागल मीरा को देखा, उसके चरित्र की ऊंचाई को नहीं। यदि यह ऊंचाई देखी जाती तो ससुराल उसे उपेक्षित नहीं करता।

चाहे कोई भी देश हो, चाहे कोई भी जाति हो, जब समाज में महिलाओं का स्थान बहुत नीचा हो जाता है तब उसके साथ ही होवनहार नागरिकों अर्थात् बच्चों का स्थान भी नीचा हो जाता है। स्त्रियों की उन्नति या अवनति पर ही प्रत्येक राष्ट्र और विश्व की उन्नति अथवा अवनति निर्भर करती है। महिलाओं का उतना ही अधिकार और कर्तव्य है जितना पुरुषों का। अज्ञान समस्त समस्याओं का मूल कारण है। स्त्री व पुरुषों के अधिकार व कर्तव्य में अंतर समझना बहुत बड़ा अज्ञान है। वर्तमान समय में विश्व के बदलते हुए परिवेश में महिलाओं को पर्दे को हटाकर बाहर आना पड़ेगा। विश्व के विकास में महिलाओं का सक्रिय होना अत्यधिक आवश्यक है। समृद्ध और उन्नतिशील विश्व के लिये यह आवश्यक है कि महिलाओं की उपयोगिता को समझा जाय। स्त्री व पुरुष का ध्येय और लक्ष्य एक ही है। वे साथ-साथ ही प्रगति करते हैं या पतन की ओर जाते हैं, साथ-साथ छोटे या महान बनते हैं, पराधीन या स्वाधीन होते हैं। अतः पुरुष के बराबर ही महिलाओं का जागरुक होना आवश्यक है। संपूर्ण विश्व में जितनी भी महिलाएं हैं अगर वे निष्क्रिय रहेंगी तो विश्व के उत्थान में अवरोध आता रहेगा। विश्व की इकाई देश ही है और किसी राष्ट्र के विकास में उस राष्ट्र की महिलाओं का सहयोग काफी महत्वपूर्ण है। गांव से लेकर शहर तक यदि सभी महिलाएं अपने-अपने कर्तव्यों को अच्छी तरह समझ लें तभी वह राष्ट्र उज्जवल बन सकता है। भावी नागरिकों के संस्कार और चरित्र निर्माण का आधार मां ही होती है। इसके लिये महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरूरी है। शिक्षित होने से मेरा तात्पर्य केवल डिग्री हासिल करना ही नहीं है। आज शिक्षित होने का अर्थ जो नारी ने समझा है या उसे जो समझाया गया है कि नये-नये फैशन करना, शरीर का बनाव श्रृंगार, ब्यूटी क्लीनिक्स में जाना आदि-आदि। वास्तव में यह सब आधुनिक बनने के नाम पर नारी का भयंकर चारित्रिक पतन ही

है । नारी का पतन अर्थात् राष्ट्रीय चरित्र का पतन होना ही है । यह सब शिक्षा या आधुनिक विचार धारा नहीं है बल्कि भयंकर अज्ञान या अशिक्षा व पिछड़ापन ही है । आज अमेरिका में अविवाहित किशोरियों के मां बन जाने की जो एक विशाल समस्या उत्पन्न हुई है यह केवल अमेरिका की ही नहीं बल्कि विश्व के लगभग समस्त देशों की ही समस्या है । केवल अमेरिका के आंकड़े प्रकाशित हो चुके हैं बाकी अन्य देशों के आंकड़े अप्रकाशित है । इस समस्या का मूल कारण मानव का सच्चे अर्थों में शिक्षित न होना ही है । मानव आज देह के प्रति बहुत आसक्त हो रहा है । बहुत अधिक देह का भान अर्थात् बाडी कान्शस बढ़ रहा है । अपने-आप को देह मानना यह मानव का एक बहुत बड़ा अज्ञान है । इसी अज्ञान के कारण स्त्री व पुरुष में भेद समझा जा रहा है । यह अज्ञान स्त्री व पुरुष में समान ही है बल्कि सबल पुरुष में कहीं अधिक है ।

शिक्षित होने का वास्तविक अर्थ है मन, बुद्धि और संस्कारों का पवित्र और सात्विक होना । दिव्य गुणों से युक्त जीवन होना । देह के बजाय आत्मा के प्रति अधिक झुकाव होना । आज विश्व बदल रहा है उन्नति कर रहा है । जरा हम पैनी बुद्धि से विचार करें क्या केवल भौतिक प्रगति को हम विश्व की उन्नति मान लें ? क्या यह हमारी सर्वांग उन्नति है ? वास्तव में यह भी एक विचार करने की बात है कि एक सभ्य उन्नत विश्व किसको माना जाय ? उसका क्या पैमाना हो ? मेरे अनुसार विश्व को सभ्य उन्नत तभी कहा जा सकता है जबकि मानव के जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक विचारों का समन्वय हो । मनुष्य में आत्मिक शक्ति का इतना विकास हो जाय कि वह खुद स्वयं पर शासन कर सके, उसमें अपनी समस्त देहभान व चारित्रिक कमजोरियों को पहिचान कर निकालने की शक्ति आ जाय । तभी मानव का हर संकल्प, विचार विश्व कल्याणकारी होगा । मानव का चरित्र इतना परिष्कृत हो जाय कि वह संपूर्ण मानव (परफेक्ट ह्यूमन बीइंग) बन जाय । जबकि मनुष्य सर्वगुण सम्पन्न संपूर्ण निर्विकारी मर्यादा पुरुषोतम संपूर्ण अहिंसक बन जाय । तभी संभव है मानव के ऐसे ऊंच श्रेष्ठ चरित्र के साथ वैज्ञानिक भौतिक प्रगति भी विनाशकारी के बजाय कल्याणकारी बन सकती है । चारों ओर पवित्रता सुख-शांति व प्रेममय वातावरण हो । तभी विश्व को सभ्य और उन्नत कहा जा सकता है ।

अब हम पुनः वर्तमान पर आते हैं । आज के युवकों में अधिकतर अशिष्ठता और मानसिक अस्वस्थ्यता देखने को मिलती है । इसका कारण है पारिवारिक और सामाजिक वातावरण का दूषित प्रभाव । यदि माताएं अपने बच्चों को आरंभ से ही अनुशासन एवं अच्छे संस्कारों की शिक्षा घर में ही देती रहें तो शिक्षण संस्थान से घरेलू शिक्षा ज्यादा लाभदायक सिद्ध होगी । बच्चों की प्रारंभिक पाठशाला घर ही है । बच्चों को पारिवारिक व सामाजिक कुरीतियों से बचाना तथा उनका सात्विक बौद्धिक विकास करना माताओं का कर्तव्य है । अच्छे बच्चे की कल देश के सच्चे नागरिक बनेंगे । अज्ञानवश आज अपने-आपको आत्मा भूलकर मनुष्य स्वयं को देह समझने लगा है और दैहिक आनद को सच्चा सुख मानकर उसके पीछे भाग रहा है । जिससे मनुष्य की विकारी वृत्तियां बहुत बढ़ गई हैं और मानव के सम्मुख उसी के द्वारा पैदा हुई नाना प्रकार की समस्याएं विकराल मुख खोलकर खड़ी हो गई हैं जिनका समाधान अब उसके पास नहीं है । जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक और मानसिक बीमारियां अधिकाधिक बढ़ती जा रही हैं । इन सभी समस्याओं और परिस्थितियों का जनक मानव स्वयं ही है ।

अतः ऐसे समय में परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ज्ञानामृत का क्लश भारत माताओं को सौंपा है कि अब वह आध्यात्मिक ज्ञान जो मानव भूल गया है पुनः उसे दे । अतः अब पुनः हमारे अतिप्रिय परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दिये जा रहे सत्य ज्ञान के अनुसार हम महिलाओं को चाहिए कि वर्तमान बदलते हुए विश्व की परिस्थिति अनुसार अपने को दीन हीन, कमजोर नारी न समझ, आत्मा समझना है, आत्मा तो शरीर रूपी चोला बदलता रहता है । कभी आत्मा पुरुष तन ले लेता है, तो कभी स्त्री तन धारण कर लेता है । हम आत्मा-आत्मा भाई-भाई हैं व एक ही परमपिता परमात्मा की संतान हैं । हम आत्मा ज्ञान स्वरूप पवित्र स्वरूप, सुख स्वरूप, शांत स्वरूप प्रेम स्वरूप आनंद स्वरूप हैं । वर्तमान समय मुझ आत्मा ने यह स्त्री देह धारण की है किंतु आत्मिक रूप से मुझ में भी वे सभी विशेषताएं और शक्तियां मौजूद हैं जो पुरुष तनधारी हर आत्मा में हैं । यह देह और दैहिक कर्मेन्द्रियां तो कर्म करने का आधार या साधन मात्र हैं । कर्म करनेवाला मैं आत्मा तो ऊंच हूं, श्रेष्ठ हूं, दिव्य हूं, शक्तिस्वरूप हूं । मुझे विश्व को एक नई आध्यात्मिक और भौतिक समन्वय युक्त दिशा दिखानी है । मुझे पूरे विश्व की समस्त आत्माओं को अर्थात् संपूर्ण मानव जाति को आत्मिक ज्ञान देकर, आत्मिक आनंद से, आत्मिक अनुभूति कराकर, मानव को आत्मिक प्रेम, आत्मिक सुख, आत्मिक शांति, आत्मिक आनंद से सरोबार

(शेष पृष्ठ २९ पर)

वरदानों से झोली भर लो, वरदाता वर लुटा रहा—

□ले.-ब्रह्माकुमार मुन्नीलाल, सिकंद्राबाद.,

'कमी', 'जमीं' पर लावे,
'खूबी' देय उड़ाय ।
ग्लानि सदा गिरावे,
महिमा देय चढ़ाय ।।
'शिवबाबा' महिमा ही करके,
हमको सदा बढ़ाते ।
रही-सही कमजोरी को,
विशेषताओं से छुपाते ।।
बाबा कहते मीठे बच्चों,
मौज बहार मनाओ ।
संगमयुग की घड़ी सुहानी,
हंसते गाते खाओ ।।
लेकिन साथ बाप को रखना,
नहीं करो फरियाद ।
चलते-फिरते, खाते-पीते,
करो प्रभु को याद ।।
परिवर्तन का यही समय है,
विश्व-स्वर्ग बनने वाला ।
संगमयुग का काल खतम है,
कलयुग है जानेवाला ।।
वरदानों से झोली भर लो,
वरदाता वर लुटा रहा ।
काहे को चिन्ता करते हो,
योग बाप ही जुटा रहा ।।
यही जगह है, यह समय है,
सुख शांति पाने का ।
बाकी जग का झूठा रिश्ता,
सचमुच में भरमाने का ।।
कहां भटकते, कहां बहकते,
दुनिया भर के चक्कर में ।
कहीं भरमते जगह जगह हो,
ज्ञान दे रहे टक्कर में ।।
अब भगवान स्वयं आये हैं,
सारे भ्रम मिटाने को ।
चिन्तित, कष्टित मानवता के,
सारे कष्ट छुड़ाने को ।।
छोड़ो गुरु, गोसाई पोथी,
तीर्थादि में जाने का ।
करो प्रयास अभी से भाई,
मीठे प्रभु-फल खाने का ।।
हम सब प्रभु-फल खा रहे,
अपना दृढ़ विश्वास ।
और निमंत्रण दे रहे,
रखकर दिल में आश ।।
एक दिन सारी मानवता,
को ही यहां पर आना है ।
मीठे प्यारे प्रभु का परिचय,
सब को यहीं से पाना है ।।
और न कोई जगह जगत में,
प्रभु-फल जहां से मिल जावे ।
न इन्सान धरा पर कोई,
जो प्रभु परिचय बतलावे ।।
एक बार ही आकर समझे,
बनाये निज तकदीर ।
छोड़ रूढ़ियों को हे भाई,
कर लो यह तदबीर ।। □

नई शिक्षा नीति

□ब्र.कु. सुधा., देहली

भारत सरकार ने जो नई शिक्षा नीति निर्धारित की अथवा अपनाई है, उसमें एक तो साक्षरता (Literacy) को महत्व दिया गया है और दूसरे विज्ञान की शिक्षा को । वास्तव में ये दोनों ही आज किसी देश अथवा समाज की उन्नति के लिए जरूरी हैं ।

परंतु प्रश्न तो यह है कि हमारे यहां उन्नति की क्या परिभाषा है ? क्या हम केवल भौतिक प्रगति को और भाषा ज्ञान अथवा उस द्वारा बौद्धिक उन्नति को ही उन्नति मानते हैं या 'उन्नति' में हम मनुष्य के चारित्रिक और नैतिक पहलुओं को भी सम्मिलित करते हैं ।

सबसे बड़ी कठिनाई तो यह है कि आज इतने पाठ्य-विषय होने के बावजूद भी यह नहीं निर्णय हो पा रहा है कि आखिर आत्मा है भी या नहीं ? आश्चर्य की बात है कि मनुष्य अपने बारे में भी निश्चयात्मक रीति से नहीं जानता ! क्या नर-नारी हड्डी•मांस या रक्त-स्नायु आदि का पुतला मात्र है या उनके शरीर में चेतन अस्तित्व भी अपनी जगह कुछ है ? अभी जो शिक्षा पद्धति है, वह तो इसी दृष्टिकोण को अपनाये हुए है कि भौतिक शरीर ही सब-कुछ है । आत्मा है या नहीं ? इस बारे में या तो शिक्षा-नीति निर्धारित करनेवालों का इंकार है और या अनिश्चयात्मक दृष्टिकोण है । इसी कारण से तो शिक्षा-नीति में आध्यात्मिक एवं नैतिक उन्नति के लिए कोई योजना नहीं बनाते ।

परंतु सोचने की बात है कि यदि किसी देश में बड़े-बड़े वैज्ञानिक हों किंतु यदि उनमें नैतिकता की कमी हो तो उस देश का क्या हाल होगा ? इंजीनियर लोगों को जब कोई पुल बनाने का कार्य दिया जायेगा तो उनकी नैतिक त्रुटि के कारण पुल भी त्रुटिपूर्ण ही बनेंगे क्योंकि उनको बनाने में जो सीमेंट आदि प्रयोग होते हैं, वह घटिया या कम इस्तेमाल किये जायेंगे ।

आज समाचारपत्रों में भी हम कितने ही ऐसे समाचार पढ़ते हैं, जिनसे मालूम होता है कि अनेक प्रकार की विद्याओं को पढ़ने के बाद भी यदि मनुष्य में नैतिकता नहीं होती तो न केवल वह अपराधी बनकर अपने जीवन को दूषित बना लेता है बल्कि वह अपने परिवारवालों तथा दूसरों को भी दुखी करता है । कोई कामवासना के वशीभूत होकर अपनी पत्नी को गुंडों से मरवा डालता है तो कोई पैसे के लालच में दूसरे देशों के खुफिया एजेंटों को अपने देश के गुप्त भेद बताता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पढ़े-लिखों की संख्या बढ़ते जाने के बावजूद भी देश और समाज की हालत सुधर नहीं रही । कारण यही है कि नैतिक शिक्षा नहीं दी जाती ।

हम यह भी देखते हैं कि संसार में दिनोंदिन दुख और अशांति बढ़ते ही जाते हैं । इसका भी यही कारण है कि मनुष्य को आध्यात्मिक शिक्षा नहीं दी जाती । अपने परमपिता परमात्मा के साथ मन का नाता न होने के कारण मनुष्य वैभव-सम्पन्न होने के बावजूद भी मन की शांति से वंचित है । इतना ही नहीं वह अपने लिए स्वयं ऐसे कार्य कर रहा है जिससे उसे भी तथा मनुष्य सम्प्रदाय को भी दुख भोगना पड़ता है । इसी आध्यात्मिक शिक्षा के अभाव के कारण ही आज घर-घर में कलह और क्लेश हैं । भाई-भाई में परस्पर अनबन है । जगह-जगह उग्रवादिता है । मनुष्य रोग-शोक से ग्रस्त है । सरकार यही कहती है कि देश में अनेक धर्म हैं । अतः वह किस धर्म की शिक्षा स्कूलों तथा कॉलेजों में दे ?

परंतु आध्यात्मिक शिक्षा से हमारा अभिप्राय धार्मिक शिक्षा नहीं है । आत्मा क्या है, परमात्मा का क्या स्वरूप है । कर्म की क्या गति है, आदि । इन विषयों पर विवेक-सम्मत रीति-से भी तो शिक्षा दी जा सकती है । अथवा कम-से-कम ऐसे नैतिक गुणों के बारे में तो शिक्षा दी जा सकती है जिनको धारण करने के लिए सभी धर्म अनुरोध करते हैं और आत्मा-परमात्मा के विषय में कुछ सार्वभौम मान्यताओं की तो शिक्षा दी जा सकती है । यदि ऐसा भी न हो सके तो विभिन्न धर्मों के दर्शनों ही की सरल जानकारी दी जाय और छात्रों तथा छात्राओं को यह प्रोत्साहन दिया जाय कि इस प्रकार कोई शिक्षा भी वे प्राप्त करें क्योंकि यह भी जीवन के लिए जरूरी है । □

विशेष सूचना :

सर्व को ज्ञात हो कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय के द्वारा भारत में निम्नलिखित पत्र-पत्रिकायें ही प्रकाशित होती हैं–

(1) मासिक ज्ञानामृत (हिन्दी)
(2) मासिक वर्ल्ड रिन्युअल (अंग्रेजी)
(3) मासिक प्युरिटी (अंग्रेजी)
(4) मासिक ज्ञानामृत (गुजराती)
(5) मासिक विश्व नाव निर्माण (कन्नड)
(6) मासिक अमृत कलश (मराठी)

अन्य कोई पत्र-पत्रिका इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा प्रकाशित नहीं होती।

"दृढ़ निश्चय बल और मेरा अनुभव"

□ब्र.कु. सूरजमुखी., आगरा

मानव ही संसार का सर्वोत्तम प्राणी है यह सभी जानते हैं परंतु विषय है—कर्मक्षेत्र पर दृढ़ निश्चय की आवश्यकता केवल मनुष्य को ही हुआ करती है। अपने जीवन में यदि किसी ने कुछ भी उपलब्धियां प्राप्त की हों, तो उसका आधार निश्चय ही बनाया होगा। अनुभव युक्त शब्दों से हम कह सकते हैं—कोई भी कार्य दृढ़ निश्चय के बल से अपूर्ण नहीं रह सका है क्योंकि उसमें आत्म-शक्ति का बल भी भरा होता है।

दृढ़ निश्चय ऐसा बल है जिससे स्वत: ही अपार शक्तियों का सम्बंध है। आत्म-शक्ति का मूल स्वरूप ही दृढ़ निश्चय है जो शरीर में रीढ़ की हड्डी पूरे शरीर को बल प्रदान करती है, शरीर का सहारा बन उसे सीधा रखती है। उसी प्रकार का कार्य जीवन में दृढ़ निश्चय का है।

दृढ़ निश्चय बल और ईश्वरीय बल

एक ओर हमारा दृढ़ निश्चय दूसरी ओर हमें मिला ईश्वरीय बल—कितना सुखद है? ये ईश्वरीय बल—उन दृढ़ निश्चयी आत्माओं को प्राप्त हुआ जिन्होंने निश्चय बल को कर्मक्षेत्र पर लगा दिया। असीम सुख है इस अनुभव में—घुटनों के बल चलनेवालों को ईश्वरीय बल से चलने का सौभाग्य मिला, परंतु उसका आधार बनी हमारा स्वयं की शक्तियों व विश्व की सबसे बड़ी शक्ति (Almighty) पर निश्चय। ये स्वर्णिम घड़ियां युगों के बाद आयीं हैं। ईश्वरीय बल से कितना महान गुप्त कार्य सम्पन्न होने जा रहा है।

निश्चय और मन की शुद्धता

दृढ़ निश्चय वाला व्यक्ति अपनी संकल्पशक्ति द्वारा भी दूसरों में बल भरने का महान पुण्य कर्म करता है। जिसमें आवश्यकता है पहले मन में चलनेवाले समर्थ संकल्पों की पूर्ण शुद्धता। संकल्पों की शुद्धता व दृढ़ निश्चय एक सिक्के के दो पहलू हैं।

कहावत है—"जड़मति होत सुजान" कैसे? "करत-करत अभ्यास के" तो जहां मानव प्रयत्न से, कठोर परिश्रम से संसार के बड़े-बड़े कार्य करने में सफलता प्राप्त करता रहा है। तो शुद्ध-संकल्प-शक्ति द्वारा व आत्म-शक्ति तथा निश्चय बल के द्वारा कैसे कोई भी कार्य असंभव कहा जा सकता है? और वो भी उनके लिये जिन्हें ईश्वरीय बल वरदान चमत्कार और वो भी उनके लिये जिन्हें ईश्वरीय बल वरदान में मिला हो। कल्पना तो कीजिये ईश्वरीय बल में क्या नहीं चमत्कार छिपा होगा? उसे भी प्रत्यक्ष करने का आधार है, दृढ़ निश्चय।

दृढ़ निश्चय में अपार शक्ति है

दृढ़ निश्चय से प्राप्त शक्ति आत्म निश्चय के शत्रु—संशय, संदेह, भय आदि नष्ट कर देती है। यही वह शक्ति है जिसमें साहस, विश्वास का गुण भरा हुआ है। दृढ़ निश्चय बल व आत्म-शक्ति के आधार पर ही असंभव कार्य भी संभव हुए हैं—हमारे सामने स्पष्ट हैं वीर पुरुषों की यादगारें, शहीदों की कुर्बानियां, धर्म की अटलता, तो किसी का त्याग व किसी की तपस्या—आधार है सभी का एक 'निश्चय'।

निश्चय बल से ही ईश्वरीय प्राप्तियां

ईश्वरीय प्राप्तियों का मुख्य आधार निश्चय ही है, क्योंकि निश्चय शक्ति अनेक शक्तियों को जाग्रत कर हर कार्य को ईश्वरीय बल प्राप्त कराने की माध्यम बनती है। पहला निश्चय स्वयं और स्वयं की शक्ति पर हो—स्वयं पर निश्चय का अभाव हमें ईश्वरीय प्राप्तियों से वंचित कर देता है—जो अपनी शक्तियों को न पहचान पायें वह ईश्वरीय प्राप्तियों की कल्पना भर कर नहीं सकता।

मेरा अनुभव

जब सभी सहारे छूट जाएं, भाग्य भी साथ न दे, संसार किनारा कर जाय, जहां कहीं भी उम्मीद नजर न आये, तूफानों के बीच क्यों न विघ्नों की लहरों में एक बार जीवन नौका अकेली रह जाय—निराशा के काले बादल मन का अंधकार बन जायें—तब यही काम आता है हमारा दृढ़ निश्चय। **निश्चय बल में वह सुख है—जो हार में जीत, जीत में जीत का अनुभव कराता है।**

हमें अटल निश्चय है—हमारी जीवन नौका की पतवार जग के खेवनहार सर्वशक्तिवान के हाथों में है हमें पार उतारनेवाले ने हमसे ही शुभकामनाएं रखी हैं—हमें अपनी छत्रछाया के नीचे, सफलता की किश्ती में बैठाने वाले ने हमें पूर्ण सहयोग देने का वायदा किया है, तब क्यों न हम निश्चिंत रहें । हम सभी का सच्चा सहारा हमारी सेवा में उपस्थित हो गया । हमें अपार सुख देनेवाले ने जीवन के गमों को हर लिया—सच्चा साथी जिंदगी का साथ निभाता चला गया—स्वीकार कर लिया जहर को—अमृत पिलाता चला गया ।

अब उनका परम कर्तव्य है जिन्होंने ईश्वरीय बल को भाग्य से प्राप्त किया—परंतु अब सभी के सहारे दाता बनकर सबकी जीवन नौका को निश्चय के बल से—स्वर्णिम संसार की ओर ले चलें कि—एक बार फिर दृढ़ निश्चय वालों की विजय की जय-जयकार हो उठे । □

इस वर्ष ज्ञानामृत का शुल्क

वार्षिक शुल्क	१८ रुपये
अर्द्ध-वार्षिक शुल्क	९ रुपये
प्रति कापी	१.२० रुपये
आजीवन शुल्क	२०० रुपये
पैट्रन	१००० रुपये

गीत

□ब्र.कु. नरेंद्र

आत्मा को सजाओ
देह भान मिटाओ

संयम और नम्रता,
आत्मा का श्रृंगार है।
शांति और गंभीरता,
यह गले का हार है।
सत्यता और मधुरता के मोती...
इसमें लगाओ....

आत्म-बर्तन शुद्ध होगा
ज्ञान शिव का समायेगा
आत्म-मणी चमकेगी
मन प्रफुल्लित हो-
जावेगा
विस्तार को छोड़ सार
में मन लगाओ...

शुद्ध संकल्प आत्मा को
शक्तिशाली बनावेगा
शुभभावना शुभकामना-से
मन तृप्त होजावेगा
मन की वीणा को
याद के सुर से सजाओ...आत्मा को...

पल भर भी गर
इस पुतले से मन हटाया
सागर समान आत्मा में
पूरे खजाने को पाया
ज्योति बन जाओ—ज्योति को जगाओ...

मनन तो किया
अब बिन्दु बन जाओ
चांद-सितारों से पार
बिन्दु में मन को लगाओ
पवित्रता के प्रकम्प जग में
फैलाओ—आत्मा को सजाओ देहभान मिटाओ...
''योग की रफ्तार बढ़ाओ''

दिव्य जीवन कन्या छात्रावास के भवन का इंदौर में निर्माण

बच्चों को लौकिक शिक्षा देना जीवन का एक अनिवार्य अंग है। शिक्षा का गिरता हुआ स्तर एवं दिन-प्रतिदिन विद्यार्थियों में पनप रही अनैतिकता, वर्तमान समय पालकों के लिए बहुत बड़ी समस्या है। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में जो अच्छे संस्कारी परिवारों के बच्चे पढ़ने जाते हैं, वे भी संगदोष के शिकार हो जाते हैं। इस कारण माता-पिता में जो तनाव बढ़ रहा है, उसका शासन के पास कोई हल दिखाई न देता है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अपने १५०० सेवाकेंद्रों द्वारा देश-विदेश में सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा लोगों का चरित्रवान जीवन बना रही है। इन सेवाकेंद्रों पर हर आयु, हर वर्ग, हर जाति के लोग नियमित रूप से आकर लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

जो परिवार इस ईश्वरीय मार्ग पर चल रहे हैं, उनके सामने भी वही समस्या है कि उनके बच्चों को स्कूल-कॉलेजों में अच्छा संग न मिलता है एवं उन्हें चिंता बनी रहती है कि उनके बच्चे भी कहीं बिगड़ न जावें। खासकर, जिनकी कन्याएं पढ़ती हैं उन्हें बाहरी वातावरण में सुरक्षा की कमी महसूस होती है। बाहरी वातावरण कितना भी विकारी क्यों न हो परंतु बच्चों के अंदर आध्यात्मिक बल मौजूद होने से असर न हो सकता है। लौकिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा एवं पवित्र-संग की काफी आवश्यकता है। इस दिशा में संस्था द्वारा विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। अहमदाबाद में गुजराती भाषा कन्याओं के लिए एक छात्रावास चलाया जा रहा है।

इंदौर में राष्ट्रीय स्तर का दिव्य जीवन कन्या छात्रावास ३ वर्षों से कार्यरत है, जिसमें सभी प्रांतों एवं भाषाओं से संबंधित बच्चों को रखने की व्यवस्था है। वर्तमान समय आठ प्रांतों— आसाम, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश की कन्याएं शिक्षा ग्रहण करते हुए जीवन में दिव्य संस्कारों को धारण कर रही हैं। इस छात्रावास में कम-से-कम ९वीं कक्षा की छात्रा को जो ईश्वरीय ज्ञान के नियमों पर चल रही है को ही प्रवेश दिया जाता है। यह छात्रावास इंदौर के क्षेत्रीय कार्यालय ओमशांति भवन से कुछ दूरी पर अलग भवन में चल रहा था। इस श्रेष्ठ कार्य का मूल्यांकन करते हुए शासन ने ओमशांति भवन के निकट जमीन संस्था को दी है। इस जमीन पर छात्रावास हेतु चार मंजिल ऊंचा भवन जिसका नाम "शक्ति भवन" है का निर्माण कार्य चल रहा है। यह कार्य पूरा होने पर कम-से-कम १०८ कन्याओं को प्रवेश दिया जा सकेगा। जून मास, ८६ में शिक्षा के नये सत्र तक इस भवन का एक भाग तैयार हो जावेगा एवं कम-से-कम ४० कन्याओं को इस वर्ष प्रवेश दिया जा सकेगा। इसलिये फिलहाल जो माता-पिता बहुत जरूरी समझते हैं एवं जिन कन्याओं को आध्यात्मिकता में विशेष रुचि है, केवल उनके आवेदन ही स्वीकार किये जावेंगे। प्रवेशपत्र एवं नियमावली आदि ओमशांति भवन, न्यू पलासिया, इंदौर के पते से मंगवाया जा सकता है। □

दिव्य-जीवन कन्या छात्रावास - शक्ति भवन

ऐसी थी वह यात्रा

□ब्र.कु. अवतार., माउंट आबू

३१ मई सन् १९८५ ई. को भारत एकता युवा पद यात्रा का शुभारम्भ भारत के प्रथम नागरिक ज्ञानी जैलसिंह जी ने आबू के ओमशांति भवन के सर्वभौमिक शांति सभागार में एक विराट सभा के समक्ष पदयात्रा दल को जिम्मेदारी का प्रतीक क्लश, विजय का प्रतीक ध्वजा और जागृति की प्रतीक ज्योति देकर किया था ।

तदन्तर कूच कर गये वह बालब्रह्मचारी शांति के दूत, शक्तिशाली विशुद्ध संकल्पों के धनी-साहसी वीर उस क्रांतिकारी किंतु शांति प्रिय-आध्यात्मिक आंदोलन को लेकर, सभी का कल्याण हो ! सभी सुखी हों !! वसुधैव कुटुम्बकम् की पुनीत भावनाओं के साथ ।

स्नेह ग्रामीणों का

ग्रामीण भाई-बहिनों के स्नेह, सहयोग और सद्भावों का तो अनुमान यहां से लगाया जा सकता है कि जब हम किसी भी गांव में जाते थे या ठहरते थे तथा ग्राम्यों से मिलते थे, तो थोड़े से समय में वे इतने नजदीकी बन जाते थे कि मानों विगत् कई वर्षों-से हमारी उनसे गहरी मित्रता हो ।

जब हम अपने अगले पड़ाव के लिये प्रस्थान करते थे तो वे निष्छल मनोवृत्ति युक्त, उदारचित और सरल स्वभाव के लोग आगे न जाकर कुछ दिन तक वहीं ठहरने का आग्रह अपनी संस्कृति के लोकगीतों, कविताओं और कव्वालियों से ग्रामीण संगीत मिश्रित—सुमधुर सुरलहरियों से किया करते थे, और नैनों से स्नेह रूपी अश्रुधारा प्रवाहित भी... ।

कई-कई तो ऐसा आलाप-विलाप भी करते थे कि मानो उनके विगत कई वर्षों के अपने घनिष्ठ मित्रों अथवा प्रिय-हितैषियों का वियोग हो रहा हो ! किंतु हम तो समय और अनुशासन की सीमाओं में बंधे हुए थे ।

ग्राम्य नागरिकों के स्नेहमय पत्र सैकड़ों हमें अभी भी प्राप्त होते जा रहे हैं और निरंतर पत्रों का यह क्रम प्रगतिशील है । यद्यपि इसमें कुछ तो यात्रा के संस्मरण जो विभिन्न लोकप्रिय पत्रों एवं पत्रिकाओं में छपे हैं के सम्बंध में आ रहे हैं तथा कुछ प्रत्यक्ष आदान-प्रदान से सम्बन्धित हैं ।

सभी पत्रों को तो हम पाठकों तक पहुंचा सकने में असमर्थ हैं । हां, उदाहरण के तौर पर एक पत्र संक्षेप में आपकी सेवा में यहां प्रस्तुत किया जा रहा है । उदय सिंह नामक एक व्यक्ति जो कि शराब पीने की लत के कारण भीख मांगने तक को मजबूर हो गया था, ने यात्रा को शराब का दान देकर भविष्य में पुनः उस घृणायुक्त मद्यपान न करने की प्रतिज्ञा की थी ।

उदय सिंह के पत्र के कुछेक अंश इस प्रकार हैं, लगता है अब इस दिशाविहीन जीवन रूपी नौका की पतवार किसी निपुण अथवा कुशल नाविक के हाथों में है । और अब इस घोर तिमिर में कुछ आशा की किरण दृष्टिपात होने लगी है । अब तक कि मैं जो महसूस करता था कि इधर खाई है उधर कुआं, वास्तव में यह मेरा भ्रम था, अब मुझे यह ज्ञात हुआ कि मार्ग तो सीधा और स्पष्ट है । मैं अपने वायदों पर पूरा चल रहा हूं और दिनों-दिन उन्नति होती जा रही है ।

एक दिन की बात है अमृतवेले से ही मुसलाधार वर्षा हो रही थी, वहां के स्थानीय नागरिकों ने सलाह दी कि जिस रास्ते से आप जा रहे हो वह इस मौसम के अनुसार बहुत विकट है । अतः दूसरे मार्ग से जाने की उन्होंने राय दी । और हमने भी वह मार्ग अपना लिया ।

काफी लंबा सफर तयकर लिया था हमने उस वर्षा में । पहले के निश्चित रास्ते में एक गांव आता था उसका नाम था मुनडू । ग्रामीणों को ज्ञात हुआ कि यात्रा हमारे गांव से न आकर दूसरे रास्ते से आगे निकल चुकी है ।

बस, क्या था गांव के ५-७ लोग साइकिलों पर आकर कहने लगे कि आप को हमारे गांव अवश्य ही आना होगा । इस सम्बंध में जब हमने असमर्थता व्यक्त की तो वे उस बरसाती पानी में जमीन पर लेटकर स्तुति करने लगे, तथा बरबस ही आंखों से स्नेहाश्रु भी... बस, उनका स्नेह और सरल स्वभाव ही न चाहते हुए भी हमें अपने मार्ग के प्रतिकूल ले गया ।

ग्राम्य नागरिकों में यद्यपि पढ़े-लिखे लोग अच्छी खासी संख्या में थे किंतु अधिकतर नई पीढ़ी के लोग, अन्यथा तो निरक्षर ही... इस सम्बंध में एक बात याद आयी एक ग्राम्य भाई हीराराम से जब उसकी उम्र जाननी चाही तो उसने बताया कि मैं कोई लिखा-पढ़ा तो हूं नहीं जो कि अपनी आयु का लेखाजोखा रख सकूं । हां, जब अंग्रेज गये थे उस वक्त मैं अच्छी होश संभाल चुका था । अब आप ही जायजा लगा लो कि मेरी उम्र क्या होनी चाहिए ?

आगे हीरा ने कहा कि आज से तो हम कई अच्छे थे, कहीं

भी चोरी, अपहरण, बलात्कार आदि की कोई घटना सुनने को भी नहीं मिलती थी । हीराराम जी का भाव था कि हमारे राष्ट्र ने जितनी अधिक भौतिक प्रगति की है, कितना अच्छा होता कि उतना ही अधिक मानवीय नैतिक मूल्यों का भी यह देश विकास करता... जब हीराराम से यह कहा गया कि हम इन सभी बुराइयों अथवा सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने एवं मानवीय नैतिक मूल्यों की सुरक्षा के लिये ही कृत संकल्प हैं ।

बस, इतना कहने की देर थी कि वह कृतज्ञ हो मेरे पैरों पर गिर पड़ा । हीराराम को उठाने पर मैंने देखा कि उसके नैनों-से स्नेहमयी गंगा-जमुना प्रवाहित हो रही थी, वह न जाने कितने आशीर्वाद दे रहा था हमें ? उसके अंतरमन की वह मूक ध्वनि मेरे कानों में गूंज रही थी । जब हीराराम जी से यह सब करने का कारण पूछा गया तो वह बोला कि ऐसे ही सच्चे देशभक्तों और साधुजनों की तलाश में था मैं... ।

इसके अतिरिक्त यात्रा दल जो क्लश लेकर चला था उसकी पूजा करना तथा आरती उतारना तो एक साधारण-सी बात हो गयी थी, और हां यों तो गांव के लोग मीलों दूर तक तो सदा ही हमारे साथ चलते थे किंतु कभी-कभी तो पूरे ही एक पड़ाव से अगले आयाम तक का पूरा ही सफर वे लोग हमारे साथ रहकर तय करते थे ।

गांवों के शांत वातावरण में रात्रि के सन्नाटे मिश्रित अंधेरे में नभ मंडल पर टिमटिमाते सितारों की धुंधली रोशनी के सहारे स्नानादि करने के लिये मीलों दूर जाने के लिये तो हम अच्छी तरह से अभ्यासी हो चुके थे ।

उन्नतीस सितंबर को यात्रा दल फतेहपुर शेखावाटी पहुंचा । वहां पर साम्प्रदायक दंगों के कारण माहौल भयातुर, क्रोधित और व्याकुल था । यद्यपि हमें प्रशासन एवं जनता के मिश्रित सहयोग से कोई भी तकलीफ़ नहीं हुई, क्योंकि हमारा सम्बंध भी तो किसी जाति विशेष, धर्म विशेष, तथा स्थान विशेष या भाषा विशेष से भी तो नहीं था, एक ही उद्देश्य बस, सर्वभौमिक लोकसेवा, ना काहूं से बैर ना कोई पराया ।

एक ही नारा और वह यह कि विश्व के सभी मानव प्राणी सुखी हों, सभी का कल्याण हो, न कोई दुखी हो और न अन्य किसी को दुख दे तथा ना ही दुख देनेवाली गतिविधियां ही हों ! ऐसा सुख, शांति-आनंदमय संसार हो ।

मानव मन में सदा सर्वदा एक-दूसरे के प्रति स्नेह के बीज अंकुरित ही हों और इस विस्तृत विश्व पर का विशाल जनसमूह एकता के पुनीत सूत्र में ऐसा बंधे जैसे एक विशाल वृहत परिवार । इन्हीं शुभ-भावनाओं को लेकर हम पुरुषार्थ कौशल थे ।

बस, यही कारण था कि स्थानीय सभी सम्प्रदाय के लोगों ने अविलम्ब ही यात्रा दल का साथ दिया और इस प्रकार हम निर्विघ्न तथा निर्विरोध ही सफल हो गये, वातावरण को शांत करने में । यह थे अनुभव के कुछ अंश अरावली की घाटियों की गिरि-श्रृंखलाओं की प्रशांत गोद में बसे पर्वतराज आबू से दिल्ली की पद-यात्रा के । □□□

अहमदाबाद नरायनपुरा कन्या छात्रावास की कन्यायें ब्र०कु० चन्द्रिका बहन के साथ दिखाई दे रही हैं।

"बदला नहीं लेना किसी से, स्वयं को बदल के दिखाना है ।"

□ब्र.कु. ओमप्रकाश (आंदा)

यह घटना, मुस्लिम धर्म के पैगंबर मुहम्मद सलअम के जीवन में आज से करीब १४०० वर्ष, उस समय घटी जब उनके माध्यम से "पवित्र कुरआन शरीफ" की आयतें इस धरा पर उतर रहीं थीं । उनका प्रभाव क्षेम बढ़ रहा था, भीड़-के-भीड़ लोग उन्हें सुनने के लिये आते थे और मुसलमान बनते जाते थे ।

एक प्रौढ़ महिला, जिसे अल्लाह के नाम से चिढ़ थी, और इनकी बातों से भी उसे अत्यंत घृणा थी । हज़रत मुहम्मद को जिस रास्ते अपनी तकरीर करने जाना होता था, उसी रास्ते में उस विचित्र महिला का घर पड़ता था । वह इनकी तकरीरों की खबर से इतनी भड़की हुई थी, कि वे जब भी अपनी शिष्य मंडली के साथ वहां से निकलते, वह महिला जानबूझकर उनके रास्ते में कूड़ा फेंक देती थी । यहां तक कि यदाकदा वह उनके ऊपर भी पड़ जाता । वे कूड़ा झाड़कर आगे बढ़ जाते । उनके साथ के लोग, उसकी इस बुरी हरकत-से भड़कते तो वे उन्हें शांत रहने का उपदेश देते ।

यह क्रम नियमित चलता था । किंतु एक दिन न जाने क्या हुआ, उनके निकलने पर कोई कूड़ा नहीं फेंका गया । उस दिन जब वे नमाज़ पर गये तो उनका मन नहीं लग रहा था, उन्होंने एक बालक को उस महिला की खबर लाने भेजा, तो उसने लौटकर बताया "वह महिला बुरी तरह बीमार है, वह अति ज्वर के कारण बेहाल हो-हो जाती है, उसके तीखे, चिड़चिड़े स्वभाव के कारण कोई मित्र-संबंधी-पड़ोसी उसकी तिमारदारी में नहीं है ।"

मुहम्मद सलअम बहुत दयालू स्वभाव के थे, वे उसकी करुण-कथा सुन अत्यंत द्रवित हुये । उन्हें नित्य कूड़ा फेंकने के कार्य के प्रति कोई वैर-भाव नहीं था, न बदले की भावना थी । अत: वे अपने तमाम शिष्यों के मना करने पर भी उसके घर नमाज़ पढ़ने के उपरांत अकेले गये, तीन-दिन, तीन-रात लगकर, पूर्ण मनोभाव से उसकी सेवा की । उसके शरीर की सफाई, कपड़ों की सफाई, घर की सफाई, समय पर दवाई, समय पर खाना आदि सर्व प्रकार की आवश्यक सेवायें कर, उसे चंगा कर दिया । जब उसने जाना कि यह तो वही पैगंबर मुहम्मद हैं, जिनपर वह रोज कूड़ा फेंकती थी, तो उसने बहुत शर्मिंदगी जाहिर की, अपनी करनी के लिये रोयी, और तहेदिल से माफी मांगी । वह उनसे इतना प्रभावित हुई कि वह भी मुस्लिम बन गई । और तन-मन, धन से उनके प्रचार-प्रसार के कार्यों में अपना जीवन समर्पित कर दिया ।

प्रश्न उठता है, मुहम्मद साहब ने अपने जीवन में क्या किया ? यही न किसी से बदला नहीं लिया, किंतु स्वयं को बदल के दिखाया । और अपने श्रेष्ठ कर्त्तव्यों द्वारा, उस प्रौढ़ा के अंदर, जो दूसरों के प्रति घृणा व चिढ़ थी, उसे दूरकर उसके स्वभाव संस्कार को प्रेम से परिपूर्ण कर दिया, उसे मुस्लिम धर्म का सेवाधारी बना दिया ।

तो प्यारे भाइयो-बहनों सर्व-आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिवबाबा इस संगमयुग पर हम बच्चों को यही शिक्षाएं दे रहे हैं । तो हमें भी प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये कि इस गोल्डन जुबिली वर्ष पर व आगे जीवन भर किसी से बदला नहीं लेना है, किंतु अपने को बदल, दूसरों को भी बदलने की श्रेष्ठतम विश्व सेवा करनी है ।

कोडंगल (आ०प्र०) में राजयोग प्रदर्शनी में स्थानीय विधान सभा सदस्य आता एन बेकटय्या को बु०कु० महादेवी चित्रों पर समझाते हुए ।

स्वास्थ्य सम्मेलन

हृदयरोग और राजयोग

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित राजयोग एज्युकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन की मेडिकल विंग के द्वारा ४ मई, १९८६ को 'हृदयरोग एवं राजयोग' इस विषय पर एक अधिवेशन का आयोजन बम्बई-कांदीवली में किया गया।

प्रातः सत्र राजयोगिनी दादी जानकी जी, सहसंचालिका ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, की अध्यक्षता में चला। ऑल इंडिया इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल सायंस, नयी दिल्ली के डॉ. ब्र.कु. किरण बहन ने इस सम्मेलन के विषय का परिचय कराते हुए बताया कि हृदय शरीर का एक बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसकी संभाल करने के लिये व्यक्ति को अधिक ध्यान देना चाहिए। हृदय बिना आराम लिये निरंतर कार्यरत रहता है। हृदय का इतना महत्त्व होने के बावजूद भी आजकल कई लोग मानसिक तनाव व धूम्रपान आदि दुर्व्यसनों के द्वारा हृदय पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। डॉ. किरण ने राजयोग को मानसिक तनाव, धूम्रपान आदि से मुक्त करानेवाली एक औषधि के रूप में वर्णन किया। कुछ उदाहरणों के द्वारा उन्होंने यह स्पष्ट किया कि राजयोग का अभ्यास हृदयरोग के मरीजों को काफी सहायता करता है।

बम्बई के के.इ.एम. हॉस्पिटल के इंटेन्सिव कार्डियॉक केयर के संचालक डॉ. पी.ए. काले ने 'वर्तमान समाज और हृदयरोग' विषय पर प्रकाश डाला। वर्तमान समय में लोगों का जीवन व्यस्त होते हुए भी शारीरिक श्रम कम होने के कारण हाई ब्लॅडप्रेशर, डॉयाबीटीस, धूम्रमान, मोटापा, मानसिक तनाव आदि रोग बढ़ते जा रहे हैं। उन्होंने अंत में बताया कि अगर इन कारणों का निवारण किया जाय तो हृदयरोग की संख्या काफी कम हो सकती है। योग का अभ्यास हृदय की धड़कन को १ मिनट में ७२ की गति तक सीमित रखता है। इसलिये इंसान लंबी आयु तक निरोगी जीवन जी सकता है।

बम्बई के ग्रंड मेडिकल कॉलेज के हृदयरोग के डॉ. वर्धाचारी जी ने हृदयरोग के कारण को बताते हुए कहा कि हृदय की दीवारों को जब जरूरी खून नहीं पहुंचता है तब वह मदद के लिये आक्रंद करता है। परिणामस्वरूप, हृदय का दर्द जन्म लेता है। उन्होंने बताया कि अगर हृदय को सलामत रखना है तो किसी भी प्रकार की तनावपूर्ण परिस्थिति में इंसान को अपने मन को शांत एवम् शीतल रखना चाहिए। मन की शांति सुस्वास्थ्य के लिये बहुत-बहुत जरूरी है।

मैसूर मेडिकल कॉलेज के फार्मेकोलॉजी विभाग के मुख्य संचालक डॉ. टी.एस. कंदस्वामी ने 'हृदय की बीमारियों में राजयोग की उपयोगिता' पर वर्णन किया। तनावपूर्ण परिस्थिति में मन को शांत रखने की विधि सहज राजयोग है। राजयोग का अभ्यास हमारे विचारों को देह-अभिमान से मुक्त कर आत्मा और परमात्म चिंतन की ओर मोड़ता है। साथ-साथ हम मृत्यु के भय से मुक्त हो जाते हैं। क्योंकि योगी यह जानता है कि शरीर की मृत्यु अनेक बार हो चुकी है, इसलिये चिंता की कोई बात नहीं। फार्मेकोलॉजी के विशेषज्ञ होने के नाते उन्होंने बताया कि योगाभ्यास से शरीर में एन्डोर्फीन नामक एक ऐसा द्रव्य उत्पन्न होता है जो दर्द से मुक्ति दिलाने में मोर्फिन से ५० गुना अधिक शक्तिशाली है।

सदा सुखी बनने के लिये पवित्रता और शांति आवश्यक!

'दुनिया में सबसे अधिक स्वस्थ मनवाली नारी' के रूप में घोषित की गयी दादी जानकी जी ने अपना अनुभव बताया कि वह बीमारियों में योग का प्रयोग कैसे करती हैं। किसी भी प्रकार की बीमारी से मुक्त होने के लिये राजयोग द्वारा शारीरिक व मानसिक शक्ति प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने बताया कि बीमारियों का कारण हमारे पूर्वजन्म के पाप कर्म हैं। परंतु ऐसे समय पर मनुष्य स्वयं को अनुभवी बनाकर दूसरे मरीजों का भी अच्छा मददगार बन सकता है। दादी जी ने यह बात दृढ़तापूर्वक कही कि यदि आपको ईश्वर में श्रद्धा है, शांति की शक्ति और पवित्रता है तो आप सदा सुखी बन सकते हैं। मन की खुशी स्वयं को और सर्व को शांति प्रदान करती है। उन्होंने बहुत अच्छा सुझाव दिया कि हरेक हॉस्पिटल में मरीजों के फायदे के लिये योगाभ्यास के कार्यक्रम अवश्य रखने चाहिए।

महाराष्ट्र की भूतपूर्व आरोग्य मंत्री तथा ऑल इंडिया मेडिकल एसोसिएशन की प्रेसीडेन्ट डॉ. ललिता राव जी ने बताया कि बीमारियों से बचने के लिये उसके जो कारण हैं जैसे कि शरीर में किसी पोषक तत्व की कमी या बहुत भीड़ में रहना आदि का निवारण किया जाय। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अशांत वातावरण माता के गर्भ में रहे हुए बच्चे के स्वास्थ्य पर भी विपरीत असर कर सकता है।

आर्थर रोड जेल के केदियों पर राजयोग का कितना अच्छा प्रभाव रहा इसका अनुभव भी उन्होंने सुनाया।

विश्राम के लिये समर्थ चिंतन

इस आध्यात्मिक विद्यालय के मुख्य वक्ता ब्र.कु. जगदीशचंद्र जी ने यह बताया कि हृदय की बीमारी से बचने के लिये तथा शफ़ा पाने के लिये समर्थ चिंतन और संपूर्ण विश्राम की अनुभूति कैसे मदद करती है । उन्होंने संक्षिप्त में समर्थ चिंतन के लिए ६ बातें बतायीं जो विश्राम की अनुभूति (Relaxation response) के लिये जरूरी है । योग की प्राथमिक अवस्था में समर्थ चिंतन मन को शरीर के भान से अलग करने में किस प्रकार मदद करता है और कैसे विश्राम प्राप्त होना है यह भी समझाया । अपने वक्तव्य को पूर्ण करते हुए उन्होंने कहा कि यदि ईश्वर को हम अपने हृदय में स्थान दें, तो हमारा हृदय स्वस्थ हो जायेगा । हम सारे विश्व के प्रति रहमभाव रखेंगे तो हमारी अनुकंपी (Sympathetic) और परानुकंपी (Parasympathetic) प्रणालियां ठीक कार्य करेंगी ।

बोरीवली की साढ़े पांच वर्ष की एक नन्हीं-सी बालिका सुनयना ने सुंदर प्रवचन किया । उसने धूम्रपान से कितने रोग होते हैं, यह बताते हुए श्रोतागण को इन व्यसनों को छोड़ने का शक्तिशाली निवेदन किया ।

तदपश्चात् ब्र.कु. दिव्यप्रभा बहन ने संगठित रूप में योगाभ्यास के द्वारा होनेवाली प्राप्तियों का अनुभव कराया और अंत में गोरेगांव की ब्र.कु. रश्मि ने एक बहुत सुंदर आध्यात्मिक गीत गाकर कार्यक्रम की समाप्ति की ।

अहमदाबाद से पधारी डॉ. कोकिला शाह ने सम्मेलन के विषय की जानकारी देते हुए शाम के सत्र की शुरुआत की । उन्होंने राजयोग के बारे में स्पष्टीकरण देते हुए उससे होनेवाले लाभ भी बताये । जैसे कि तनावपूर्ण परिस्थिति में अपने व्यवहार को परिवर्तन करना, बुरी आदतों से छुटकारा और पारिवारिक सम्बंधों में सुधार आता है आदि... ।

बम्बई के हृदयरोगतज्ञ (Cardiologist) डॉ. अनुपम देसाई ने तंबाकू में रहे हुए विषैले तत्व-निकोटिन के भयंकर परिणाम से अवगत कराया । उन्होंने यह सुझाव दिया कि युवा वर्ग को धूम्रपान से होनेवाली हानि बताकर उनको उसके प्रति डर पैदा कराकर उससे दूर करना चाहिए । भले यह व्यसन उसे धीरे-धीरे छोड़ने को कहें । सिग्रेट की मात्रा कम करें, उसकी आधी चुस्की लें आदि... ।

डॉ. जे.जे. दलाल ने हृदयरोग के वैदकीय निवारण के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये । उन्होंने कहा कि सामान्यत: हृदयरोग के चार प्रकार हैं:— १. जन्म के साथ, २. हृदय के पर्दे से सम्बंधित, ३. अधिक रक्तदाब और ४. हृदय की नलिकाओं से सम्बंधित रोग ।

उपरिनिर्दिष्ट रोगों के निवारण की उन्होंने कुछ प्रमुख बातें भी बतायीं ।

भाभा अटोमिक रिसर्च सेंटर, बम्बई के वैज्ञानिक डॉ. आय.सी. दवे ने योगाभ्यास के अपने अनुभव सुनाये कि कैसे उन्हें और उनकी पत्नी को राजयोग के अभ्यास द्वारा पुराने रोगों से मुक्त होने में मदद मिली । उनका यह मंतव्य है कि हर डॉक्टर को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के मुख्यालय— मधुबन' में जाना ही चाहिए । जहां वे समर्थ राजयोगियों के श्रेष्ठ विचारों का लाभ लेकर उसका अनुभव कर सकें ।

डॉ. दिनेश एस. परीख ने हृदय-विकार के अनेक कारण बताते हुए कहा कि इनमें से कुछ कारणों को रोका जा सकता है ? जैसे कि चर्बीयुक्त आहार, शारीरिक व्यायाम का अभाव, धूम्रपान, जल्दबाजी और चिंता आदि । कुछ कारण ऐसे भी हैं जिसको नहीं रोका जा सकता । जैसे कि अनुवंशीकता ।

महाराष्ट्र की शिक्षा व कायदामंत्री बहन चंद्रिका केनिया जी ने इस विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय शांति सम्मेलन के व्यवस्था की काफी प्रशंसा की । उनका विश्वास है कि प्रतिदिन १० मिनट का योगाभ्यास भी व्यक्ति को सारा दिन शांति और स्वस्थता का अनुभव कराता है । अपने प्रवचन में उन्होंने यह भी व्यक्त किया कि अगले साल से लागू होनेवाली शिक्षणप्रणाली में योगाभ्यास, नारी शिक्षा और आरोग्य शिक्षा को योग्य महत्त्व दिया जायेगा । उन्होंने रोग प्रतिबंध पर जोर देते हुए कहा कि अस्पतालों में काफी खर्च होता है । लेकिन उसका लाभ लेनेवाले लोग १० से १५ प्रतिशत ही हैं ।

हृदयरोग चिकित्सक डॉ. रोहित मोदी ने हृदय को निरोगी रखने के लिये योग्य व्यायाम की आवश्यकता पर जोर दिया । उन्होंने स्वस्थ मानसिक स्थिति का आधार राजयोग बताया ।

बम्बई के मनोरोग चिकित्सक एवं राजयोग के विद्यार्थी डॉ. गिरीश पटेल ने सत्र के विषयों का सार सुनाया । उन्होंने हृदयरोग होने के मुख्य कारण बताये— १. मानसिक तनाव, २. धूम्रपान, ३. हाई-ब्लॅडप्रेशर, ४. मधुमेह, ५. मोटापा, ६. व्यायाम में सुस्ती, ७. विपरीत व्यक्तित्व (जल्दबाजी, समय पर कार्य न होने पर मानसिक दबाव या तनाव बढ़ जाना आदि ।)

(शेष पृष्ठ २९ पर)

"वरदानी वर्ष में वरदानों की वर्षा"

□ब्र.कु. आत्मप्रकाश, आबू पर्वत

वरदानों के सागर परमपिता परमात्मा शिव हम सभी ब्रह्मा वत्सों पर लगातार ५० वर्षों से वरदानों की वर्षा करके जीवन को हरा-भरा बना रहे हैं । अपने वरदानी बोलों-से हमें सजाकर वरदानीमूर्त बना रहे हैं । और सभी की झोली वरदानों से भरपूर करने के लिए स्वर्ण जयंति निमित्त इस वर्ष को वरदानी वर्ष के रूप में घोषित किया है । अर्थात् इस वर्ष हमें मनचाहा वरदान प्राप्त करने की स्वर्ण अवसर दिया है । कितना भी शुक्रिया अदा करें उस प्राण प्यारे परमपिता का, जिसने न सिर्फ हमें अपना बनाया, लेकिन अपने सर्वस्व भंडार बच्चों को लुटा दिये ।

वरदान प्राप्त करने की विधि

किसी भी वरदान को प्राप्त करने के लिए पहले वरदान को संभालने की शक्ति को अपनाना परमावश्यक है । और दृढ़-संकल्प के आधार से यह शक्ति प्राप्त होती है । जैसे जब कोई लौकिक पिता अपने बच्चे को धन की पूंजी देना चाहता है, तो पहले वह जांच करता है कि बच्चे में धन को संभालने की या धन को यथार्थ रीति से उपयोग करने की शक्ति है या नहीं । जब उसे एहसास होता है कि बच्चा इस धन की पूंजी को संभाल सकता है तब ही वह उसे देता है । ऐसे ही शिवबाबा जब हम बच्चों में वरदान को संभालने की शक्ति देखते हैं तो स्वत: ही हमें वरदान प्रदान करते हैं ।

वरदान प्राप्त करने का आधार

वरदान पाने के लिए यह आवश्यक है कि वरदाता हमसे खुश हो । हम जानते हैं कि वर देनेवाला परमपिता हमारे सच्चे और नि:स्वार्थ दिल पर खुश होते हैं, यदि हम उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं तो भी वह हमसे खुश होते हैं । तो इसी प्रकार यदि हम परमपिता को प्रसन्न करते हैं, तो वह भी हमें अनेक वरदान देकर प्रसन्न कर देता है ।

वरदान को पाने का आधार देह के भान का दान भी है । क्योंकि इस देह के भान ने ही आत्मा के भान को नष्ट करके बेहोश बनाकर बहुत कष्ट दिये हैं । आत्मा जब देह के भान में आती है तब ही माया उसका कान पकड़ती है और वरदानों की खान छीन लेती है । और जब हम आत्मा देह के भान को भूलकर आत्मस्वरूप में टिकते हैं तो वरदाता बाप को यथार्थ रूप से पहचानकर वरदानों को पुन: प्राप्त करते हैं । लेकिन सौदागर शिवबाबा का हम बच्चों से वायदा है कि—

"जितना करेंगे देह के भान का दान, उतने ही पायेंगे वरदान" ।

सर्वश्रेष्ठ वरदान है 'योगीभव' का

परमपिता ने स्वयं आकर सहजयोग सिखाया, जिन्होंने इस योग को सहजरूप से स्वीकार कर लिया, जिन्होंने इसकी यथार्थ विधि को जान लिया, जो ईश्वर-प्रेम में खोना सीख गये, उनके लिए ये योग वरदान बन गया । और जब यह सर्वश्रेष्ठ वरदान प्राप्त होता है तो उससे पवित्रता का, मनन शक्ति का, सदा खुश रहने का, सदा हल्का रहने का, विघ्न विनाशक बनने का, निर्भय बनने का, निश्चिंत रहने का, सफलता का वरदान तथा अन्य सभी वरदान सहज ही प्राप्त होने लगते हैं । जैसे कि उस आत्मा पर वरदानों की वर्षा ही होने लगती है ।

इस वर्ष अव्यक्त बाप-दादा ने कहा

"बाप-दादा गोल्डन जुबिली के निमित्त इस वर्ष बच्चों को विशेष एक्स्ट्रा मार्क्स कमाने के लिए गोल्डन चांस दे रहे हैं । जो समझदार बच्चे होंगे वो ही बाप-दादा के सूक्ष्म इशारे प्रमाण अपने पुरुषार्थ की गति को तेज करेंगे । वरदानों से झोली भरने के लिए योग की रफ्तार की तेज करके रेस में आगे नंबर लेंगे ।"

योग की ही रेस क्यों ?

कल्प में केवल एक ही बार आत्माओं की योग में रेस लगती है । जो आत्माएं रेस में आनेवाले अनेक माया के आंधी-तूफानों का सामना करते हुए लगातार आगे बढ़कर संपूर्णता की मंज़िल पर विजय का झंडा लहराते हैं, वो ही विजयी रतन के रूप में विश्व में प्रत्यक्ष होती हैं । अंत में सभी उन्हीं की

महिमा के गीत गाते हुए फूलों की वर्षा से सम्मान करते हैं और द्वापरयुग से भी गायन-पूजन करते रहते हैं ।

वास्तव में इस रेस में मन रूपी घोड़े पर आत्मा रूपी मालिक बुद्धि रूपी लगाम को अटेन्शन रूपी हाथ में पकड़ते हुए विराजमान होता है । लेकिन रेस में खड़ा होने के पहले आत्मा, अपने घोड़े को ज्ञान की शक्तिशाली खुराक खिलाकर, दिव्य गुणों की धारणा-से सुंदर सजाता है । यह घोड़ा जितनी ज्ञान की खुराक खाकर शक्तिशाली बनता है, उतना ही वह रेस में तेजी से दौड़ता है । ऐसा घोड़ा अनेक घोड़ों को इस रेस में भाग लेकर दौड़ने की प्रेरणा देने की गुप्तसेवा भी करता है । योग में ही मन रूपी घोड़ा संकल्प रूपी कदम से परमात्मा की शक्ति के सहयोग से तेजी से संपूर्णता की ओर भागता रहता है । इसलिए ही योग की रेस गाई हुई है ।

योग की रेस में योग की रफ्तार का महत्त्व

योग की विभिन्न स्थितियां योग की रेस की गति (Speed) को दर्शाती हैं । जब आत्मा, परमात्मा से रूहरिहान करती है तो समझो मन रूपी घोड़ा दौड़ रहा है, जब फरिश्तेपन की स्थिति का अनुभव करती है तो समझो घोड़ा जंप दे रहा है, जब विश्व-कल्याणकारी स्थिति का अनुभव करती है तो समझो घोड़ा हाय जंप दे रहा है और जब बीज रूप स्थिति का अनुभव करती है तो समझो मन रूपी घोड़ा तेजी-से मंज़िल की ओर उड़ रहा है । जब आत्मा को शिवबाबा की याद नहीं तो समझो घोड़ा एक ही जगह खड़ा है । जब आत्मा स्वयं का भी भान भूल जाती है तो समझो घोड़ा रेस के पथ से बाहर निकल चुका है और कभी व्यर्थ संकल्प या विकल्प चलते हैं तो समझो घोड़ा पीछे लौट रहा है । ऐसे सारे दिनभर हमें अपनी योग रफ्तार पर चेकिंग रखते हुए तेजी-से आगे बढ़ते रहना है ।

रेस में दूसरों को देखनेवाला दुर्घटना का शिकार बनता है

जैसे रेस में दौड़नेवाले घोड़े का जब किसी पर ध्यान जाता है तो वह तेजी-से दौड़ नहीं पाता और रास्ते में आनेवाली ऊंचाई-निचाई पर तथा रोड़े पर ध्यान नहीं दे सकता जिससे वह बड़ी भारी दुर्घटना का शिकार बनता है । जब वह नीचे गिरता है तो पीछे से, तेजी-से दौड़कर आनेवाले घोड़ों के पैरों के नीचे कुचला जाता है जिससे बेशुमार चोटें खाकर घायल होता है । ऐसे ही इस योग की रेस में जब कोई आत्मा दूसरों के पुरुषार्थ की गति को तथा कमियों को देखती है तो वह स्वयं के पुरुषार्थ को भूल जाती है । अटेंशन की मात्रा कम होने से याद की यात्रा ठीक से कर नहीं पाती । परदर्शन से वह परचिंतन, ईर्ष्या-द्वेष के रूप में माया की चोटें खाती है और दिल से शिकस्त होती है ।

जैसी बुद्धि रूपी तार, वैसी योग की रफ्तार

बुद्धि एक सूक्ष्म तार के रूप में आत्मा का परमात्मा से संबंध जुटाती है । यह सूक्ष्म तार जितनी तीक्ष्ण होगी, उतनी ही ज्यादा उसकी शक्तियों के प्रवाह का संचारण करने की क्षमता होगी । अगर बुद्धि रूपी तार रफ (Rough) है तो योग की रफ्तार तेज नहीं हो सकती । सदा बुद्धि में ज्ञान का मनन करते रहने से, बुद्धि दिव्य तथा तीक्ष्ण बनती जाती है, फलस्वरूप योग की रफ्तार स्वत: ही बढ़ती रहती है ।

न होगी तेज योग की रफ्तार, तो माया करेगी गिरफ्तार !

जब योग की रफ्तार तेज गति की नहीं होती, तब ही माया दुर्गति करती है । माया सबसे पहले बुद्धि रूपी तार पर ही वार करती है । बुद्धिवान को भी बुद्धु बनाकर अहंकार के उल्टे नशे में चूर कर देती है और असली ईश्वरीय नशे को उड़ा देती है । खुशी के झूले में झूलनेवाली आत्मा एकदम गम के गड्ढे में गिर जाती है । ऐसे गमवाले को ही वह गुम कर देती है । बाद में उसकी अच्छी खबर लेकर क़बर अर्थात् बेहोश बना देती है ।

न होगी तेज योग की रफ्तार, तो सहने होंगे दु:ख अपार !

योग की रफ्तार तेज न होने से आत्मा निस्तेज अर्थात् कमजोर बनती जायेगी । शक्तियों के अभाव से किसी भी समस्या के प्रभाव में जल्दी आयेगी । सहनशक्ति की कमी से छोटी-मोटी परिस्थितियां उन्हें तंग करके तपस्या भंग करेगी । बुद्धि भी सदा हलचल में रहने से अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति से वंचित रहती है । और समय परिवर्तनानुसार विभिन्न प्रकार के विघ्न तथा समस्याएं आयेंगी तो उसे वो दुखों के पहाड़ जैसी अनुभव होंगी । इसलिए सदा याद रहे—''कठिन तपस्या से समाप्त होगी, कठिन समस्या ।''

योग की रेस में अलबेलापन सबसे बड़ा विघ्न

वास्तव में यह संगमयुग है अल्लाह की वेला । इस

अल्लाह की वेला में अलबेलापन तकदीर-हीनता की निशानी है । इस वेला में ही माया दुश्मन बदला लेने के लिए, योग की रेस में दौड़नेवाली आत्मा, जिस पर वरदानों की वर्षा हो रही है, उसके हाथ में चतुराई से अलबेलेपन का छाता पकड़वाती है और यह छाता वरदानों का खाता बढ़ने नहीं देता है । ऐसी अलबेली आत्मा के मन पर सदा निराशा के घने काले पहाड मंडराते हैं जिससे वह वरदान को पाने की आशा भी नहीं रख सकती है ।

जहां होगी ईर्ष्या, वहां न होगी वरदानों की वर्षा

ईर्ष्यावाला मन सदा अशांत, बेचैन तथा चिड़चिड़ा रहता है । ऐसे मन में परमात्मा की याद ठहर नहीं सकती । ऐसा व्यक्ति ईर्ष्या की अग्नि में जलता रहता है । और जहां ईर्ष्या की अग्नि है वहां योग की अग्नि नहीं हो सकती, क्योंकि वरदान प्राप्ति के लिए मन की अग्नि रहित अर्थात् शीतल होना परमावश्यक है । अन्यथा वरदान भी ईर्ष्या की अग्नि में जलकर नष्ट हो जाते हैं ।

न भरेंगे वरदानों से झोली, तो जाना होगा हाथ खाली

चेक करें—कहीं आप स्वयं को धोखा तो नहीं दे रहे हैं ? क्योंकि बाप-दादा के इशारे अनुसार इस वरदानी वर्ष के अमूल्य घड़ियों को गवांकर अपनी झोली खाली तो नहीं रख रहे हैं । अभी वरदानों से झोली न भरेंगे तो अंत में पछताना ही होगा । और अब की बाज़ी कल्प-कल्प की बाज़ी है, अब की हार कल्प-कल्प की हार है ।

वरदानी वर्ष में वरदानीमूर्त्त बनने के लिए

१. अमृतवेला को सफल करना सीखें क्योंकि अमृतवेला ही वरदान पाने की वेला है ।

२. इस वरदानी वर्ष में सदा प्रसन्नचित्त रहें ।

३. स्वयं को हर प्रकार के टकराव से बचाएं ?

४. शक्तियों को बचत करने की योजना बनाएं ।

५. प्रतिदिन परमात्मा के गुणों से स्वयं की भेंट करते रहें ।

इस प्रकार वरदान प्राप्ति के दिव्यकाल में अनेक वरदान प्राप्त करके स्वयं को संपन्न आत्मा बनाएं । ये वरदान आगे चलकर स्थापना के कार्य में बहुत काम आयेंगे । अब जबकि परमपिता वरदानों की वर्षा करके हमें सर्वस्व प्राप्त कराने के लिए हमारे द्वार पर आये हैं तो क्यों न हम जन्म-जन्म के लिए वरदानों से अपनी झोली भर लें । □

स्वास्थ्य सम्मेलन

पृष्ठ.२६ का शेष

उन्होंने इनसे बचने के लिये कहा कि राजयोग से प्राप्त अस्ट शक्तियां मानव को हृदयरोग के धोखे-से बचाती हैं । १. दृष्टिकोण में परिवर्तन, २. व्यस्तता में भी मन को शांत एवं स्वस्थ रखना, ३. क्षमाशीलता और किसी के दोष को भुला देना, ४. परिस्थिति के अनुसार अपने को मोड़ना, ५. दूसरों की कमजोरियों को समाना, ६. न्यारा और प्यारा बनने की शक्ति, ७. मनोबल में वृद्धि और ८. संस्कार परिवर्तन करने की शक्ति ।

अंत में उन्होंने बताया कि हृदयरोग के कारण हरी, वरी और करी (Hurry, Worry & Curry) को दूर करनेवाला राजयोग हृदय को निरोगी रखता है । उनका यह कहना है कि अधिवेशन में उपस्थित डॉक्टर्स अपने मरीजों को दिन में कम-से-कम दो बार योगाभ्यास करने की राय दें । जैसे उनको नियमित रूप से दवाई और व्यायाम के बारे में कहते हैं । □

महिलाओं के लिये बदलता हुआ विश्व

पृष्ठ.१६ का शेष

कर देना है । और स्वर्णिम युग का प्रारंभ मन की वृत्तियों को स्वर्णिम बनाकर करना है । नारी केंद्र है, धुरी है । नारी के श्रेष्ठ व पवित्र संस्कार बनने से परिवार उन्नत होगा, परिवारों के उन्नत होने से राष्ट्रीय चरित्र ऊंचा उठेगा तथा राष्ट्रों के ऊंचा उठने से विश्व में स्वर्णिम युग आयेगा । आज नारी को केवल सरस्वती, जगदंबा और लक्ष्मी की पूजा ही नहीं करते रहना बल्कि अब स्वयं में वे सभी दिव्य ज्ञान एवं दिव्य गुण धारण करके स्वयं को सरस्वती, जगदंबा और लक्ष्मी बनाना है तभी यह विश्व बदलेगा । □

फिरोजपुर सीटी लायन्स क्लब के हाल में ब्र०कु० तृप्ता शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को शिव बाबा का परिचय दे रही हैं।

गुमला सेवा केन्द्र द्वारा 'आजन' नामक स्थान में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन दक्षिण छोटा नागपुर की आयुक्त सुश्री राधा सिंह जी मोमबत्ती प्रज्वलित कर करती हुई।

करतारपुर के०डी० पब्लिक स्कूल के फाउंडेशन समागम पर ब्र०कु० शुकला बहन स्कूल की प्रिन्सिपल कमला जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए।

ऐत्मादपुर के प्रसिद्ध मेला कंस में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए माननीय एस०डी०एम० साहब, साथ में ब्र०कु० गीता बहन खड़ी है।

उड़ीस-कोझरगढ़ सेवा केन्द्र के वार्षिकोत्सव समारोह के शुभ अवसर पर भ्राता जे०के० देव, कलक्टर, भ्राता सुरेन्द्र पटनायक चेयरमैन, भ्राता एम० स्वेन सी०डी०ए०ओ० ब्र०कु० बहनें मंच पर बैठी हैं।

बम्बई दहीसर सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित राजयोग पदर्शनी में भ्राता जयन्ती भाई और सामाजिक कार्यकर्ता भ्राता नवनीत गांधी जी को ब्र०कु० ऊषा बहन समझाते हुए।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

□ब्र.कु. लक्ष्मण एवम् ब्र.कु. सत्यनारायण,
कृष्णानगर देहली., द्वारा संकलित

विसनगर (गुजरात) सेवाकेंद्र की ओर से स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में स्वर्णिम युग मेला और राजयोग शिविर का आयोजन किया गया था। २३ अप्रैल सुबह ९ बजे ट्रक में सजाई गयी स्वर्ग की सुंदर झांकी के साथ १२०० श्वेतवस्त्रधारी ब्राह्मण वत्सों की शांति यात्रा विसनगर के मुख्य मार्गों से निकाली गयी। इस मेले का उद्घाटन शाम को ६.३० बजे गुजरात के मुख्यमंत्री भ्राता अमरसिंह चौधरी जी और दादी प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका ब्र.कु.ई. विश्वविद्यालय, ने मंगलदीप प्रज्वलित कर किया। इस मेले से विसनगर की समस्त जनता ने लाभ उठाया। इनके अलावा आसपास के गांवों के लोग ट्रक, ट्रेक्टर, जीप आदि में आकर हर रोज अच्छी तरह लाभ लेते रहे। कई गांवों से निमंत्रण भी मिले हैं। करीब एक लाख लोगों ने यह मेला देखा। ५५० व्यक्तियों ने राजयोग शिविर और लगभग १०० व्यक्तियों ने सान शिविर से लाभ उठाया। मेले के समाचार गुजरात के मुख्य दैनिक समाचारपत्रों में भी छपते रहे। □

आगरा—समाचार मिला है कि एत्मादपुर में छः दिन के प्रसिद्ध ''मेला कंस'' में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय एस.डी.एम. ने किया और प्रदर्शनी के अंतिम दिन ए.डी.एम. भ्राता कुलदीप सेठ ने समापन किया। इस मेले में कई स्थानों से निमंत्रण भी मिले हैं। हमें पुरस्कार वितरण में पहला पुरस्कार ''शील्ड'' प्रदान किया गया। □

जयपुर—राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के जयपुर आगमन पर राजभवन में आयोजित समारोह में राजस्थान के राज्यपाल के सम्मुख राष्ट्रपति को शिवबाबा का चित्र एवं साहित्य भेंट किया गया। महाविनाश के बारे में, सतयुगी सृष्टि की स्थापना के बारे में उनको विस्तृत जानकारी दी गयी जिसको उन्होंने ध्यान से सुना एवं सराहा। □

झांसी—समाचार मिला है कि शहर में चार दिवसीय चैतन्य नौ देवियों की झांकी, नाटक, प्रवचन आदि का आयोजन किया गया। जिससे हजारों आत्माओं ने आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। आखिरी दिन पत्रकार गोष्ठी भी की गई जिसमें शहर के सभी मुख्य पत्रकारों ने भाग लिया। □

भूवनेश्वर—सेवाकेंद्र के सब-सेंटर दसपल्ला में ''लंका पीरी'' के उपलक्ष्य पर विशाल मेले के अंतर्गत जन-जन को प्रभु मिलन का संदेश देते हेतु एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन तीन दिन के लिये किया गया। तीन दिन प्रवचन का कार्यक्रम भी चला। इस अवसर पर योग शिविर और ज्ञान शिविर का आयोजन भी किया गया जिनमें से कुछ आत्माएं नियमित रूप से ज्ञान और योग की क्लास भी कर रही हैं। □

रायगढ़—सेवाकेंद्र की ओर से ग्राम गोरखा में चार दिवसीय ग्राम उत्थान आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगायी गयी। ग्राम उत्थान प्रदर्शनी देखकर अनेक आत्माओं ने बुराइयां छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इसके अलावा चंद्रपुर में युग परिवर्तन आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगायी गयी जिसका उद्घाटन राजकुमार दुष्यंत सिंह जूदेव के द्वारा किया गया। इस अवसर पर नगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति पधारे थे जिसमें प्रमुख भ्राता प्रहलाद राय जी राईस मिल के मालिक भी इस अवसर पर उपस्थित थे। □

गुमला—समाचार मिला है कि 'ऑजन' नामक स्थान में एक ''चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी'' का आयोजन किया गया। जिसके फलस्वरूप हजारों आत्माओं ने शिवबाबा का संदेश सुना। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन दक्षिण छोटा नागपुर की आयुक्त सुश्री राधासिंह जी के द्वारा संपन्न हुआ। उनके साथ भ्राता ए.एन.पी. सिन्हा उपायुक्त गुमला तथा 'रांची एक्सप्रेस' नामक समाचारपत्र के प्रबंध निदेशक भ्राता सिवाराम एवं अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी पधारे। □

केशोदु—समाचार मिला है कि स्वर्ण जयंती के निमित एक ''विश्व शांति सम्मेलन'' तथा स्वर्ग में एक सीट खाली है ड्रामा का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन जिला पंचायत जूनागढ़ के प्रमुख भ्राता आंवोलिया जी ने किया। इस प्रोग्राम में शहर के अग्रणी व्यापारी, उद्योगपति एवं पत्रकारों ने तथा अन्य ५००० लोगों की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके साथ-साथ एक शोभा यात्रा भी निकाली गयी। □

कटक—सेवाकेंद्र की ओर से तीन दिन के लिए जगतपुर में विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जगह-जगह पर चरित्र निर्माण के सलाइट्ज भी दिखाए गये। इसके

अलावा केन्झार कस्बे में उप-सेवाकेंद्र का वार्षिक उत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया । इस अवसर पर शांति यात्रा भी निकाली गयी । शाम को टाउन हाल में सामूहिक प्रोग्राम रखा गया । □

थाना—सेवाकेंद्र द्वारा शहर में दो स्थानों पर प्रदर्शनी लगायी गयी । पहली प्रदर्शनी ज्योति इंग्लिश स्कूल के कम्पाउंड में जिसका उद्घाटन शहर के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्रीविष्णु जी ठाणेकर ने किया । दूसरी प्रदर्शनी शहर की प्रसिद्ध साई व्यु होटल के कम्पाउंड में लगाई गयी । इस प्रदर्शनी का उद्घाटन महा-नगरपालिका के सदस्य एवं भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्षा श्रीमती विणा भाटिया ने किया । इन प्रदर्शनियों द्वारा कई हजार आत्माओं ने ईश्वरीय संदेश प्राप्त किया । □

गोहाटी—सेवाकेंद्र की ओर से नवगांव के हनुमान मेले में स्टाल लेकर एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । मेले का उद्घाटन करने के लिए द्वारिका के जगत्गुरु शंकराचार्य जी आये थे । इस मेले के अवसर पर प्रवचन करने के लिए निमंत्रण प्राप्त हुए । प्रवचनों द्वारा तथा प्रदर्शनी द्वारा कई हजार आत्माओं को शिवबाबा का संदेश दिया गया । □

कन्टाई (मिदनापुर)—सेवाकेंद्र की ओर से जगह-जगह पर चरित्र निर्माण प्रदर्शनी व राजयोग शिविर का आयोजन किया गया । वेनीपुर नामक जगह पर विशेष गंगा मेला का आयोजन हुआ । इस मेले का उद्घाटन प. बंगाल के मंत्री भ्राता किरणमय नंदा जी ने किया । यह उद्घाटन कार्यक्रम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर से रखा गया । इस प्रोगाम में वक्ता के रूप में पशु मंत्री भ्राता सुधीरदास जी ने भी भाग लिया । संस्था के कार्यक्रमों से आप लोग बहुत प्रभावित हुए । □

वेरावल—सेवाकेंद्र की ओर से जन-जन को ईश्वरीय संदेश देते हेतु "युवा जागृति पदयात्रा" वेरावल से उना तक निकाली गयी । इस बीच करीब ३० गांवों को ईश्वरीय संदेश दिया गया । दूसरी पदयात्रा में करीब छः गांवों की सेवा की गयी । इन पदयात्राओं की सेवा से करीब आठ गीता पाठशालाएं खुल गयी हैं । □

मैसूर—समाचार मिला है कि शांति दूत राजयोगिनी दादी जानकी जी मैसूर में पधारीं । यहां के प्रख्यात जगमोहन महल में दादी जी का स्वागत कार्यक्रम रखा गया । शांति संदेश देने हेतु नगर के प्रमुख स्थानों से शांति यात्रा निकाली गयी । शाम को शांति सम्मेलन आयोजन किया गया । इस सम्मेलन में प्रसिद्ध गुरु आदि चंचनगिरि मठ के स्वामी बालगंगाधर नाथ जी, आर्चविशप डॉ. मोरिया प्रोसेफ तथा जनाब बशीर अहमद भी पधारें । उन्होंने अपने धर्म के अनुसार विश्व-शांति के बारे में अपने-अपने विचार सुनाये । अंत में दादी जानकी जी ने शांति का संदेश सुनाकर अनुभव कराया । □

चालीस गांव—सेवाकेंद्र की ओर से दहिवद गांव में दो दिन की आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगायी गई । प्रदर्शनी का उद्घाटन आमदार चांगरे के द्वारा हुआ । उन्होंने ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की बहुत सराहना की । और उन्होंने कहा यह संस्था मानव को कुमार्ग से सुमार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दे रही है । राजयोग शिविर के आयोजन से गांव की बहुत सी साधारण आत्माओं ने लाभ उठाया । अब वहां नित्य प्रति राजयोग द्वारा अनेक आत्माएं लाभ उठा रही हैं । □

माले गांव—सेवाकेंद्र की ओर से रावल गांव में दो दिन की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें रावल गांव के शुगर फैक्ट्री के मैनेजर ने आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया । आप प्रदर्शनी देखकर बहुत प्रभावित हुए तथा अनेक प्रश्नों के उत्तर पाकर अत्यंत हर्षित हो ईश्वरीय विश्वविद्यालय की और बहनों की अथक सेवा की सराहना की और भविष्य में और अधिक लाभ लेने का वायदा किया । □

भावनगर—स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में जन-जन को नवयुग निर्माण की खुशखबरी पहुंचाने हेतु अनेकानेक कार्यक्रम आयोजित किये गये । भावनगर के ९ हाईस्कूलों में विद्यार्थियों और शिक्षकों के समक्ष राजयोग और चरित्र निर्माण विषय पर प्रवचन हुए । इसके अलावा शहर की विभिन्न संस्थाओं के बीच स्लाइड शो तथा वीडियो शो के कार्यक्रम हुए । नगर के विभिन्न क्लबों, मंडलों व स्थानों पर अनेक प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किये गए । निकटवर्ती चार गांवों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगायी गयी । इस तरह ईश्वरीय सेवा के बहुत से प्रोग्राम आयोजित करके जन-जन को प्रभु का संदेश दिया गया । □

उस्मानाबाद—सेवाकेंद्र की ओर से चिंचोली नामक गांव में वहां के तिलकन्टेश्वर मंदिर में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस प्रदर्शनी द्वारा लगभग २००० आत्माओं ने लाभ लिया । वहां के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सेवाकेंद्र खोलने का निमंत्रण दिया । इसके अलावा डॉ. गिरीश पटेल के आगमन पर शहर के करीब ६ स्थानों पर प्रोग्राम रखे गये । □

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी ६/१६ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ग्रन्थ भारती, शाहदरा, दिल्ली-३२ से छपवाया, Regd No 10563/65-D, (E)—70